04- अपनेपन का प्रतीक है रक्षाबंधन

05- स्वतंत्रता के परिप्रेक्ष्य में कला एवं कलाकार

06- कोलकाता में डॉक्टर की गैंगरेप कर हत्या का विरोध

07- वे ख़ास फ़िल्में जिनका कथानक दोहराया नहीं गया

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 18 अगस्त, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 294 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

बदरी बाबुल के
अंगना जइयो
जइयो बरसियो कहियो
कहियो कि
हम है तोरी बिटिया
की अखियां
अब के बरस राखी
भेज ना पाई
सूनी रहेगी मेरे
वीर की कलाई
तो पूर्वा पूर्वा भैया के
अंगना जइयो
छू छू कलाई कहियो
छू छू कलाई कहियो
कहियो कि
हम हैं तोरी बहना की रखियां...

कविता- कुंवर बेचैन

फोटो- बंसीलाल परमार

जन्माष्टमी पर बांके बिहारी मंदिर के अंदर होगी लाइव स्ट्रीमिंग

हाईकोर्ट ने 25 से 29 अगस्त तक जिला प्रशासन को सौंपी कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी

प्रयागराज (एजेंसी)। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बांके बिहारी मंदिर में 25 से 29 अगस्त 24 तक चलने वाले जन्माष्टमी पर्व के दौरान कानून व्यवस्था की जवाबदेही जिला प्रशासन को सौंपी है। कोर्ट ने राज्य सरकार की भीड़ नियंत्रण योजना के तहत लाइव स्ट्रीमिंग की व्यवस्था को मंदिर के भीतर तक ही सीमित रखने का आदेश दिया है। कोर्ट ने सरकार की शेष योजना को जारी रखने की अनुमति दी है। कोर्ट ने रिसीवर के जरिए 1939 से चल रही मंदिर व्यवस्था के तहत सिविल जज जूनियर डिवीजन मथुरा के परामर्श से सीसीटीवी कैमरे लगाने की छूट दी है। हाईकोर्ट ने जिलाधिकारी को आदेश दिया है कि वह सिविल जज के निर्देश का अनुपालन कराएं। 1939 के मुंसिफ के आदेश से भीड़ प्रबंधन, मंदिर प्रबंधन देख रहा है, जो रिसीवर द्वारा किया जा रहा है। हालांकि इसे हाईकोर्ट में चुनौती दी गई है। कोर्ट ने कहा- अभी सरकारी योजनाओं सहित मंदिर प्रबंधन की देखरेख में जन्माष्टमी पर्व के इंतजाम किए जाएंगे। याचिका की अगली सुनवाई 28 अगस्त को होगी। यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा तथा न्यायमूर्ति राम मनोहर नारायण मिश्र की खंडपीठ ने अनंत शर्मा व एक अन्य की जनहित याचिका की सुनवाई करते हुए दिया। कोर्ट ने 8 नवंबर 23 को सरकार को भीड़ प्रबंधन को लेकर कुछ निर्देश जारी किए थे।

इनका पालन नहीं किया जा सका। अब सरकार ने अर्जी देकर निर्देशों में संशोधन की मांग की गई है। लोगों ने सरकार की मांग पर आपत्ति की और कहा भीड़ नियंत्रण कोर्ट के आदेश से नहीं हो सकता। सरकार ने हलफनामा दायर कर कहा जन्माष्टमी पर्व पर उचित इंतजाम किया जाएगा। मंदिर के अंदर व बाहर लाइव स्ट्रीमिंग की जाएगी। विभिन्न स्थानों पर बाहर स्क्रीन लगाई जाएगी। साथ ही भीड़ नियंत्रण के लिए बैरिकेडिंग की जाएगी। एक समय में एक निश्चित संख्या मंदिर में प्रवेश करेगी। जिला प्रशासन बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं की देखभाल व्यवस्था करेगा।

हमने जी20 को एक नया ढांचा देने का संकल्प लिया

पीएम बोले-हमने विकास से जुड़ी समस्याओं पर खुलकर चर्चा की

मोदी ने कहा-दुनिया की चुनौतियों से निपटने में भारत बना बड़ा पॉवर

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट में कहा कि कोविड के बाद दुनिया अनिश्चितता से जूझ रही है और आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना कर रही है, ऐसे में पिछले दशक में स्थापित वैश्विक शासन और वित्तीय संस्थान आज के मुद्दों से निपटने में कम पड़ गए हैं। भारत वर्चुअल प्रारूप में वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट की मेजबानी कर रहा है, जिसमें वैश्विक दक्षिण के देशों को एक मंच पर विभिन्न मुद्दों पर अपने दृष्टिकोण और प्राथमिकताओं को साझा करने के लिए एक साथ लाने की परिकल्पना की गई है। शिखर सम्मेलन में अपने उद्घाटन भाषण में पीएम मोदी ने कहा, 2022 में जब भारत ने जी20 की अध्यक्षता संभाली, तो हमने जी20 को एक नया ढांचा देने का संकल्प लिया। वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट एक ऐसा मंच बन गया, जहां हमने विकास से जुड़ी समस्याओं और प्राथमिकताओं पर खुलकर चर्चा की, और भारत ने ग्लोबल साउथ की उम्मीदों, आकांक्षाओं और प्राथमिकताओं के आधार पर जी20 एजेंडा तैयार किया। पीएम ने कहा, हमने समावेशी और विकासोन्मुखी दृष्टिकोण के साथ जी20 को आगे बढ़ाया। इसका सबसे बड़ा उदाहरण वह ऐतिहासिक क्षण था जब अफ्रीकी संघ को जी20 की स्थायी सदस्यता मिली। प्रधानमंत्री मोदी ने संघर्षों और अन्य चिंताओं के बीच मौजूदा वैश्विक परिदृश्य में अनिश्चितता पर प्रकाश डाला और कहा कि वैश्विक शासन और वित्तीय संस्थान आज की चुनौतियों से निपटने में अक्षम रहे हैं। उन्होंने कहा, आज हम ऐसे समय में मिल रहे हैं, जब पूरी दुनिया में अनिश्चितता का माहौल है। दुनिया कोविड के प्रभाव से पूरी तरह बाहर नहीं निकल पाई है।

कर्नाटक सीएम के खिलाफ भ्रष्टाचार मामले में चलेगा केस

राज्यपाल ने मंजूरी दी

- सिद्धारमैया पर जमीन के मुआवजे के लिए फर्जी डॉक्यूमेंट्स लगाने का आरोप

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के खिलाफ जमीन से जुड़े भ्रष्टाचार मामले में केस चलेगा। राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने शनिवार को इसकी आधिकारिक अनुमति दे दी है। सिद्धारमैया पर मैसूरु शहरी विकास प्राधिकरण की जमीन के मुआवजे लिए फर्जी दस्तावेज लगाने का आरोप है। 26 जुलाई को राज्यपाल ने नोटिस जारी कर प्राधिकरण से 7 दिन में जवाब मांगा था। 1 अगस्त को कर्नाटक सरकार ने राज्यपाल को नोटिस वापस लेने की सलाह दी और उन पर संवैधानिक शक्तियों के दुरुपयोग का आरोप लगाया। प्राधिकरण घोटाले में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया, पत्नी, साले और कुछ अधिकारियों के खिलाफ शिकायत की गई है। एक्टिविस्ट टीजे अब्राहम, प्रदीप और स्नेहमयी कृष्णा का आरोप है कि सीएम ने प्राधिकरण अधिकारियों के साथ मिलकर महंगी साइट्स को धोखाधड़ी से हासिल करने के लिए फर्जी दस्तावेज लगाए। साल 1992 में मैसूर अर्बन डेवलपमेंट अथॉरिटी ने कुछ जमीन रिहायशी इलाके में विकसित करने के लिए किसानों से ली थी। इसके बदले प्राधिकरण की इंसेंटिव 50-50 स्कीम के तहत जिनकी भूमि अधिग्रहित होती है उन्हें विकसित भूमि में 50 फीसदी साइट या एक वैकल्पिक साइट दी गई। 1992 में प्राधिकरण ने इस जमीन को डीनोटिफाई कर कृषि भूमि से अलग किया।

खुशहाल मध्यप्रदेश के शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति तक जारी रहेगी विकास यात्रा : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मिशन मोड में सभी वर्गों के विकास के लिये होगा कार्य

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश ने पिछले वर्षों में प्रगति और विकास के मार्ग पर तेजी से कदम बढ़ाए हैं। समृद्ध, साक्षर, स्वस्थ और खुशहाल मध्यप्रदेश के शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति के लिए शुरू की गई विकास यात्रा निरंतरता जारी रहेगी। राज्य सरकार युवा, महिला, गरीब और किसान भाइयों के विकास और कल्याण के लिए मिशन मोड में कार्य करेगी। प्रदेश में नवीन औद्योगिक इकाइयों को स्थापित करने और निवेश को बढ़ाने के लिये रीजनल इन्वेस्ट समिट का श्रृंखलाबद्ध आयोजन किया जा रहा है। मध्यप्रदेश की खुबियों और यहाँ दी जा रही सुविधाओं से निवेशक आकर्षित हो रहे है। प्रदेश के बाहर के नामी उद्योगपतियों ने राज्य सरकार के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर कर अपनी औद्योगिक इकाइयां स्थापित करने में रूचि दिखाई है। प्रदेश में आने वाले निवेश और उद्योगों से स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलेगा, जिससे वे आत्म-निर्भरता की ओर अग्रसर होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्वतंत्रता दिवस पर प्रदेश की जनता के नाम संदेश देते हुए कहा कि विकसित भारत-2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में युवाओं की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। युवाओं का संकल्प, मेहनत और सोच ही देश को नई ऊंचाइयों तक पहुंचायेगी। प्रदेश में शुरू होने वाला युवा शक्ति मिशन युवाओं के भविष्य को उज्ज्वल और सशक्त बनाने का संकल्प है। समय की मांग के अनुसार युवाओं को ए.आई., मशीन लर्निंग और कोडिंग जैसी उभरती तकनीकों की शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार ने 485 करोड़ रुपये का निवेश किया है। प्रदेश के 55 जिलों में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में बायो-टेक्नालॉजी और कम्प्यूटर सांइस जैसे नए विषयों को जोड़ा गया है। पाठ्यक्रम में 35 नए व्यवसायिक विषयों को भी शामिल किया गया है।

सीखो-कमाओ योजना में इन्टर्नशिप को दिया बढ़ावा

युवा अपने कौशल और निखार सकें तथा उन्हें बेहतर व्यवसाय के अवसर प्राप्त हों, इस उद्देश्य से मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना में इन्टर्नशिप को बढ़ावा दिया गया है। योजना में 8 हजार चयनित प्रशिक्षणार्थियों को 6 करोड़ 60 लाख रुपये का स्टायपेंड प्रदान किया गया है। प्रदेश में 22 नई आईटीआई की स्थापना की गई है जिनसे 5 हजार 280 सीटों की बढ़ोतरी होगी। देवास, छिंदवाड़ा व धार में ग्रीन स्किलिंग आईटीआई स्थापित किए गए हैं जहां सोलर टेक्नीशियन और इलेक्ट्रिक व्हीकल मैकेनिक जैसे पाठ्यक्रम उपलब्ध होंगे। नवाचार और उद्यामिता को बढ़ाने के लिए 6 विश्वविद्यालय में इन्क्यूबेशन केंद्र स्थापित किए गए हैं। स्टार्टस्अप को 50 हजार से डेढ़ लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता दी जा रही है। यह कदम युवाओं के नवाचार को प्रोत्साहित करने के साथ ही औद्योगिक जगत की समसामयिक आवश्यकतानुसार रोजगार उपलब्ध कराने और उद्यमित्ता के क्षेत्र में नए आयाम उपलब्ध कराने में मदद करेंगे।

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

बहन जब आती है
तब कभी खाली हाथ नहीं आती ।
द्वारिका के पेड़े,
दानाओली का पेठा,
बूरे का तगार,
खाने या बरतने का
ये और वो ही नहीं आते उसके साथ
बहुत कुछ और भी आता है ।

उसके साथ आते है;
वे सपने जो कुछ अकेले
तो कुछ मिलकर देखे होते हैं,
और पूरे न होने के बाद
भी गुजरे नहीं होते हैं,
आती हैं स्मृतियां,
अधबीच में छूटी दोस्तियों,
ऐन्वेई तर्क हो गए संबंधों की
और ज्यादातर इकतरफ़ा ही रहे
प्रेम की वे कहानियां,
जिन्हें यूं तो दोनों ने ही
एक दूसरे को कभी
बताया नहीं होता।
मगर इसके बाद भी
छुपाया भी नहीं होता।
बहन जब आती है
तब कभी खाली हाथ नहीं आती।
उसके साथ आते हैं
थोड़े से पिता,
थोड़ी सी माँ,
थोड़ा सा वह घर भी आता है
उसके साथ जो न अब उसका है
न हमारा है,
मगर फिर भी है और रहेगा हमेशा।

- बादल सरोज

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 18 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

शुभा और हुसैन बंधुओं के सुरों से गुलजार हुई

भोपाल। शनिवार की शाम भोपाल के संगीत प्रेमियों के लंबे समय तक याद रहने वाला अनुभव बन गई। यह आकाशवाणी भोपाल द्वारा मध्य प्रदेश शासन के सहयोग से आयोजित 'स्वर उत्सव' कार्यक्रम द्वारा संभव हुआ। इस कार्यक्रम में जहां एक और देशभक्ति से परिपूर्ण रचनाओं का समावेश था वही शास्त्रीय संगीत की स्वर लहरियों का और वही उम्दा शायरी और सुमधुर तानों से सजी गज़लो का भी।

सबसे पहले भोपाल के युवा संगीतकार उमेश तरकसवार के संगीत निर्देशन में भोपाल के ही युवा गायक गायिकाओं ने एक के बाद एक मधुर देश भक्ति गीतों से वातावरण मैं जोश से भर दिया। देश देशभक्ति गीतों की शुरुआत फारसी में लिखें गए तराने 'सलाम माँ तुझे सलाम' से हुई तत्पश्चात तराना-ए - कफस से ली गई रचना 'हे वतन के वास्ते अक्सर वंदे मातरम्' भी सुनाई। तत्पश्चात मंच पर पधारी देश की सुविख्यात गायिका शुभा मुदगल, जिन्होंने आज प्रस्तुति के लिए राग अपनी प्रस्तुति का आरम्भ राग गौड़ मल्हार से किया जिसमे दो रचनायें प्रस्तुत की। विलंबित रचना तिलवाड़ा ताल में निबद्ध एक पारम्परिक बंदिश थीं और मध्य लय रचना त्रिताल में निबद्ध जिनके रचयिता पंडित रामाश्रय झा 'रामरंग'

थे। इसके बाद आपने राग सरस्वती कल्याण में इन्ही की रची दो रचनाएँ सुनाई जो कि क्रमशः रूपक और त्रिताल में निबद्ध थी। आपने गायन का समापन स्वयं रचित राग मिश्र मांड में संगीतबद्ध एक दादरा से किया। जिसके बोल लिखें है वाजिद अली शाह 'अख्तर' ने। श्रोता मन्त्रमुग्ध होकर शुभा जी की गायकी का आनंद लेते रहे। इनके साथ तबले पर संगत की अनीस प्रधान और हारमोनियम पर सुधीर नायक ने। तत्पश्चात गज़लों की दुनिया के सशक्त हस्ताक्षर, लब्ध प्रतिष्ठित उस्ताद अहमद हुसैन और उस्ताद मोहम्मद हुसैन ने अपनी मखमली आवाज़ और गज़लगोई के अंदाज़ से श्रोताओं को दाद देने और झूमने को मजबूर कर दिया। आपने सबसे पहले सुप्रसिद्ध भजन 'गाईये गणपति जग वंदन' प्रस्तुत किया। उसके बाद वतनपरस्ती से लेबरेज़ एक गीत 'यें हिन्द यें मेरा वतन' से श्रोताओं के मन में देशप्रेम की भावना जगा दी। उसके बाद एक के बाद एक गज़लों की प्रस्तुति देकर खूब तालियाँ और वाहवाही लूटी। भोपाल में हुसैन बन्धुओं के अनेक प्रशंसक हैं। जैसे जैसे कार्यक्रम आगे बढ़ता गया वैसे वैसे लोगों के मन में और गज़लें सुनने का मोह बढ़ता चला गया।

आकाशवाणी भोपाल के कार्यक्रम प्रमुख राजेश भट ने बताया कि आकाशवाणी द्वारा देश भर के अनेक शहरों में आज़ादी के पर्व को उत्साह पूर्वक मनाने के लिए इस तरह के आयोजन किये जा रहे है। उपमहानिदेशक यशवंत चिवंडे ने आपने उद्बोधन में कहा कि आकाशवाणी आज भी स्वस्थ मनोरंजन और सही सूचना श्रोताओं तक पहुंचाने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। कार्यक्रम का संचालन आकाशवाणी के वरिष्ठ उद्घोषक पुरुषोत्तम श्रीवास और अमिता त्रिवेदी ने किया।

संक्षिप्त समाचार

गगनयान मिशन की पहली टेस्ट फ्लाइट दिसंबर में

● इसरो बोला-जी1 रॉकेट के हार्डवेयर श्रीहरिकोटा पहुंचे

बेंगलुरु (एजेंसी)। इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (इसरो) अपने पहले मानव अंतरिक्ष मिशन की पहली टेस्ट फ्लाइट इस साल दिसंबर में लॉन्च करेगा। इसमें इंसान को नहीं भेजा जाएगा। मिशन की दूसरी फ्लाइट में रोबोट व्योम मित्र और तीसरी उड़ान में चार अंतरिक्ष यात्रियों को भेजा जाएगा। इसरो ने

अभी दूसरी और तीसरी उड़ान का समय नहीं बताया है। इसरो चेयरमैन एस. सोमनाथ ने बताया- मिशन के रॉकेट के हार्डवेयर श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर पहुंच चुके हैं। वहीं त्रिवेंद्रम के विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र में क्रू-मॉड्यूल पर काम जारी है। उम्मीद है कि नवंबर तक यह काम पूरा हो जाएगा। गगनयान का मानव मिशन 3 दिनों का होगा, जिसके तहत एस्ट्रोनॉट्स के दल को 400 किमी ऊपर पृथ्वी की कक्षा में भेजा जाएगा।

रक्षाबंधन के दिन आसमान में दिखेगा सुपर ब्लूमून

● इस दिन नीला हो जाएगा चंद्रमा, होगी अनोखी खगोलीय घटना

वॉशिंगटन (एजेंसी)। खगोलीय घटनाओं में दिलचस्पी रखे वालों के लिए एक बेहद खास मौका आने वाला है। इस साल हमें चार सुपरमून दिखाई देंगे। उनमें से पहला हमें रक्षाबंधन के त्योहार के मौके पर दिखाई देगा। 19 अगस्त को दिखाई देने वाला यह चंद्रमा ब्लू मून भी होगा। सवाल उठता है कि आखिर ये चंद्रमा खास क्यों होगा और क्या नाम की ही तरह यह हमें नीला दिखाई देगा। चंद्रमा धरती का चक्कर लगाने के साथ ही धरती के नजदीक और दूर भी होता रहता है। सुपरमून

तब होता है जब चंद्रमा पृथ्वी के 90 फीसदी से ज्यादा करीब होता है। सुपरमून शब्द का आविष्कार खगोलशास्त्री रिचर्ड नोले ने 1979 में किया था। पूर्ण सुपरमून को साल का सबसे चमकीला और सबसे बड़ा पूर्ण चंद्रमा माना जाता है। सामान्य चंद्रमा की तुलना में लगभग 30 फीसदी से ज्यादा यह चमकीला होता है और 14 फीसदी बड़ा दिखाई देता है। वहीं दूसरी तरफ ब्लू मून दो तरह के होते हैं और इनका नीले रंग से कोई लेना-देना नहीं होता। पहला ब्लू मून मौसमी होता है।

नायब तहसीलदार को ट्रैक्टर से कुचलने की कोशिश

रेत माफिया ने धमकाया- स्पॉट पर ट्रैक्टर चढ़वाकर जान से खत्म कर दूंगा

सारंगपुर (नप्र)। राजगढ़ में ट्रैक्टर चालक ने नायब तहसीलदार को वाहन समेत कुचलने की कोशिश की। इसके बाद वह रेत से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली लेकर भाग गया। नायब तहसीलदार पुलिस बल के साथ ट्रैक्टर चालक को पकड़ने पहुंचे तो रेत माफिया ने फोन कर धमकी दी। उसने कहा- स्पॉट पर ट्रैक्टर चढ़वाकर जान से खत्म कर दूंगा।

घटना संडावता में दोपहर की है। थाना प्रभारी अनिल राहोरिया ने बताया कि देर रात नायब तहसीलदार की शिकायत पर तीन लोगों पर केस दर्ज कर लिया है। आरोपी फरार हैं। इस घटना से जुड़े वीडियो शनिवार को सामने आए।

संडावता नायब तहसीलदार सुरेश सिंह ने बताया कि शुक्रवार

दोपहर करीब 12 बजे वे सारंगपुर से कार्यालय जाने के लिए निकले थे। इस दौरान रास्ते से जा रहे रेत से भरे ट्रैक्टर को रोककर पूछा कि कहां जा रहे हो। इसके बाद चालक ने ट्रैक्टर की स्पीड तेज की और तहसीलदार की चलती गाड़ी को कुचलने की कोशिश की। गाड़ी के कांच टूट गए। इसके बाद चालक ट्रैक्टर लेकर दयाखेड़ी की तरफ भाग गया।

पुलिस को देख ट्रैक्टर छोड़कर भागे आरोपी

नायब तहसीलदार सुरेश सिंह ने बताया, 8 अगस्त को पवन भिलाला को रेत से भरे ट्रैक्टर ट्रॉली के साथ पकड़ा था। उसके साथ नीरज भिलाला भी था। 16 अगस्त शुक्रवार को भी पवन भिलाला रेत से भरा ट्रैक्टर ले जाता हुआ मिल गया। मैंने उसे पहचान लिया था। पवन भिलाला जैसे ही भागा, मैंने लीमाचौहान पुलिस को सूचना दी और वाहन का पीछा किया। आगे जाकर देखा तो ट्रैक्टर देदला गांव के खेत में कीचड़ में फंसा मिला। पुलिस मौके पर पहुंची तो ट्रैक्टर चालक और उसका साथी भाग गया। पूछताछ करने पर ग्रामीणों ने पुलिस को बताया कि ट्रैक्टर तेज गति से निकला, बच्चे बाल-बाल बचे।

माफिया बोला- क्या बिगाड़ लिया मेरा

नायब तहसीलदार ने बताया, मैं गांव में लोगों से घटना के संबंध में बात कर रहा था। इसी दौरान अननोन नंबर से कॉल आया। पिक करने पर कॉलर ने कहा- खजुरिया घाटा से भगवान सिंह पाल बोल रहा हूं। क्या मेरे ट्रैक्टर ट्रॉली को रोका है। 8 तारीख को भी मेरे दो ट्रैक्टर जब्त किए थे। क्या कर लिया था तुमने उस दिन। मेरे रेत भंडारण में 400 ट्रॉली का पंचनामा बनवाया, बस इतना ही न। मैंने वहां से पूरी रेत ही गायब करवा दी, जिसकी जानकारी सारंगपुर तहसीलदार को भी है। मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। ऊपर तक पहचान है। आगे से ऐसा किया तो स्पॉट पर ही ट्रैक्टर चढ़वा कर जान से खत्म कर दूंगा।

रेत माफिया समेत तीन पर केस दर्ज

नायब तहसीलदार सुरेश सिंह ने बताया कि रेत माफिया अधिकारियों को धमका दे रहे हैं। मेरे वाहन को कुचलने की कोशिश की और फोन पर धमकी दी। ट्रैक्टर को जब्त कर लीमाचौहान थाने में खड़ा करवाया है। सारंगपुर एसडीएम को घटना की जानकारी देकर प्रतिवेदन भेजा गया है।

राज्य घुड़सवारी अकादमी के खिलाड़ियों ने 21 पदक जीते

मंत्री श्री सारंग ने दी बधाई

भोपाल (नप्र)। जयपुर में चल रही घुडसावरी प्रतियोगिता में जूनियर नेशनल क्वालीफायर 2024 में मध्यप्रदेश राज्य घुड़सवारी अकादमी के 12 खिलाड़ियों ने नेशनल के लिए क्वालीफाई किया। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने अकादमी के खिलाड़ियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं हैं।

जयपुर आर्मी एरिया में 61 केवलारी में चल रही घुडसावरी प्रतियोगिता सप्त शक्ति हॉर्स शो-2024, 11 अगस्त से प्रारंभ होकर 19 अगस्त तक चलेगा। इसके बाद क्रॉस कंट्री नेशनल 1 स्टार और 2 स्टार लेवल की प्रतियोगिता 21 से 29 अगस्त तक आयोजित होगी।

अभी तक की प्रतियोगिताओं में राज्य घुड़सवारी अकादमी के खिलाड़ियों ने 21 पदक जीते। इसमें 12 स्वर्ण, 7 रजत, 2 कांस्य पदक हासिल कर अकादमी के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में अकादमी के खिलाड़ी राजू सिंह ने व्यक्तिगत स्पर्धा में 3 गोल्ड मेडल जीते हैं। राजू सिंह आगामी आने वाली एशियाई चैंपियनशिप-2025 थाईलैंड के लिए वह एशियन गेम्स-2026 टोक्यो जापान के लिए तैयारी भी कर रहे हैं।

मेपकास्ट-विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में प्रथम राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस का आयोजन

सभी विजेताओं को 21 अगस्त को मेपकास्ट में मुख्य कार्यक्रम में सम्मानित किया जायेगा

भोपाल। म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (मेपकास्ट), नेशनल हाइड्रोलॉजी प्रोजेक्ट (भारत सरकार) एवं म. प्र. शासन के जल संसाधन विभाग द्वारा शहर के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में प्रथम राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस का आयोजन किया गया। विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों में प्रथम राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के कार्यक्रम की इस श्रृंखला के अंतिम चरण में ट्राइबल वेलफेयर के एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय भोपाल में विद्यार्थियों में अंतरिक्ष विज्ञान और रॉकेट्री के प्रति आकर्षण और रोचकता पैदा करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष दिवस मनाया गया। शासकीय स्कूल के बच्चों ने रॉकेट लांच और चंद्रयान की सॉफ्ट लैंडिंग कर राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया।इस कार्यक्रम में मप्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के प्रधान वैज्ञानिक श्री विकास शेन्डे द्वारा भारतीय चंद्रयान 3 कार्यक्रम के महत्व और इस लक्ष्य को प्राप्त करने में आने वाली कठिनाइयों के संबंध में बताया गया कि किस प्रकार भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने सफलतापूर्वक इस वैश्विक उपलब्धि को प्राप्त किया।

विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित रीजनल साइंस सेंटर के परियोजना समन्वयक श्री साकेत सिंह कौरव ने इसरो के साथ चंद्रयान 3 एवं भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया ।इसके बाद विशेषज्ञ के रूप में शैलेंद्र कसेरा ने बच्चों को सॉफ्ट लैंडिंग में आने वाली समस्याओं को प्रयोगात्मक रूप से समझने के लिए चंद्रयान सॉफ्ट लैंडिंग प्रतियोगिता करवाई जिसमे स्कूल के द्वारा चंद्रयान का लैंडर मॉडल डिजाइन कर आसपास के सामान्य घरेलू वस्तुओं से बनाया गया और सभी चंद्रयान लैंडर मॉडलों के सॉफ्ट लैंडिंग की प्रतियोगिता कराई गई जिसमे छात्राओं द्वारा डिजाइन कर बनाए गए लैंडर ने सफलतापूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग की। इसके साथ ही भारत की अंतरिक्ष की गौरव गाथा जैसे विषय पर पेंटिंग और निबंध प्रतियोगिता भी करवाई गई।

राजेश सिंह नए रक्षा सचिव, पुण्य सलिला स्वास्थ्य सचिव बनीं

● केंद्रीय कैबिनेट की अपॉइंटमेंट कमेटी ने 15 अफसरों के विभाग बदले

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीनियर आईएएस अफसर राजेश कुमार सिंह नए रक्षा सचिव होंगे। वे मौजूदा रक्षा सचिव अरमानी गिरधर की जगह लेंगे, जो 31 अक्टूबर को रिटायर हो रहे हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय में विशेष सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव को स्वास्थ्य व परिवार कल्याण सचिव नियुक्त किया गया है। केंद्रीय कैबिनेट की अपॉइंटमेंट कमेटी ने शुक्रवार (16 अगस्त) को सेक्रेटरी लेवल के अफसरों के विभाग बदले हैं। प्रेस रिलीज के जरिए 15 से ज्यादा अफसरों की नई नियुक्ति की जानकारी दी गई है। राजेश सिंह केरल कैडर के 1989 बैच के अधिकारी है। वे केंद्र सरकार में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, कृषि समेत कई अन्य विभागों में महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं। राजेश अभी डिपार्टमेंट फॉर प्रमोशन ऑफ इंडस्ट्री एंड इंटरनल ट्रेड के सचिव हैं। उन्हें रक्षा मंत्रालय में ओएसडी के रूप में नियुक्त किया गया है। राजेश सिंह की सर्विस 31 अक्टूबर, 2026 तक है।

भागलपुर में अगवानी पुल का सुपर स्ट्रक्चर फिर गिरा

3 साल में तीसरा हादसा,बिहार में 2 साल में गिरे छोटे-बड़े 21 पुल

भागलपुर (एजेंसी)। भागलपुर में शनिवार सुबह सुल्तानगंज अगवानी गंगा पुल के पिलर 9 का सुपर स्ट्रक्चर गिर गया। गंगा के बढ़ते जलस्तर के कारण ये घटना घटी है। पिलर संख्या 9 और 10 के बीच का स्लैब के सेगमेंट के लिए बना स्ट्रक्चर नदी में समा गया। ये तीसरी बार है, जब इस पुल का सुपर स्ट्रक्चर गिरा है। सुपर स्ट्रक्चर गिरने का वीडियो भी सामने आया है। इस हादसे में किसे के हताहत होने की सूचना नहीं है। बिहार में पिछले 2 साल में 21 पुल गिरे हैं। इनमें 15 से ज्यादा छोटे और पुराने पुल भी हैं। बीते साल 4 जून 2023 को अगवानी की तरफ से पिलर संख्या 9,10, 11, 12 का सुपर स्ट्रक्चर गिर कर गंगा में समा गया था। इससे पहले 30 अप्रैल 2022 के रात में हवा के झोंके से पिलर संख्या पांच गिरा था।

प्रोजेक्ट पूरा होने पर झारखंड से जुड़ जाएगा उत्तर बिहार

ये पुल अगुवानी और सुल्तानगंज घाट (भागलपुर जिला) के बीच बन रहा है जो बरौनी खगड़िया ह॥ 31 और दक्षिण बिहार के मोकामा, लखीसराय, भागलपुर, मिर्जाचौकी एनएच 80 को जोड़ेगा। प्रोजेक्ट पूरा होने पर बिहार के खगड़िया की ओर से 16 किलोमीटर और सुल्तानगंज की ओर से चार किलोमीटर लंबी एप्रोच रोड के जरिए उत्तर बिहार सीधे मिर्जा चौकी के रास्ते झारखंड से जुड़ जाएगा। पुल बनने से खगड़िया से भागलपुर आने के लिए 90 किलोमीटर की दूरी मात्र 30 किलोमीटर रह जाएगी।

लखनऊ एयरपोर्ट पर रेडियोएक्टिव हो गया लीक, 2 कर्मचारी बेहोश

● 1.5 किमी का एरिया खाली कराया, टर्मिनल-3 एनडीआरएफ और एसडीआरएफ को सौंपा

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ के चौधरी चरण सिंह (अमौसी) एयरपोर्ट पर रेडियोएक्टिव लीक हुआ। इससे 2 कर्मचारी बेहोश हो गए। एनडीआएफ और एसडीआरएफ की टीम को बुलाया गया। टीम ने टर्मिनल-3 पर सर्च ऑपरेशन शुरू किया। 1.5 किमी का एरिया खाली कराया। एहतियात के तौर पर लोगों की एंट्री बंद कर दी। 1 घंटे तक जांच-पड़ताल की गई। अब स्थिति सामान्य है। एयरपोर्ट पर फ्लाइट ऑपरेशन प्रभावित नहीं है। फ्लाइट लखनऊ से गुवाहाटी जा रही थी। उसी दौरान एयरपोर्ट टर्मिनल-3 पर स्कैनिंग के दौरान मशीन से बीप की आवाज आने लगी।

रहस्य बन रहा कोलकाता का डॉक्टर रेप मर्डर केस!

● हमला करने कहां से आए थे 7000 गुंडे, नहीं चल पाया पता ● आरोपियों की लिस्ट में कैब ड्राइवर, डिलीवरी बॉय का भी नाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में 8 अगस्त की रात जो कुछ हुआ, वो बेहद शर्मनाक है। एक जूनियर डॉक्टर के साथ पहले दुष्कर्म हुआ और इसके बाद गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी गई। इस घटना के विरोध में देशभर के डॉक्टर सड़कों पर हैं लेकिन, इससे भी ज्यादा शर्मनाक घटना, 14 अगस्त की रात उस वक्त हुई, जब आरजी कर मेडिकल कॉलेज के बाहर डॉक्टर विरोध प्रदर्शन

कर रहे थे। विरोध जता रहे इन डॉक्टरों पर एक भीड़ ने हमला किया। ये भीड़ मामूली नहीं थी। इस भीड़ में करीब सात हजार लोग शामिल थे।

अब सवाल ये है कि डॉक्टरों पर हमला करने के लिए आखिर इतनी बड़ी संख्या में ये गुंडे कहां से आए थे। कोलकाता डॉक्टर मर्डर केस की तफ्तीश में ऐसे कई सवाल हैं, जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। वहीं, इस मामले में कोलकाता पुलिस ने लिस्ट बनाई है, उनके नाम भी चौंकाने वाले हैं। पुलिस की इस लिस्ट में एक महिला सहित 25 लोगों के नाम हैं। पुलिस ने कई युवकों को गिरफ्तार किया है। इनमें ऐप-कैब ड्राइवर, दुकानदार, फूड डिलीवरी बॉय और कई बेरोजगार युवा शामिल हैं।

कांग्रेस शहर-जिला अध्यक्ष का निलंबन अभी भी बरकरार

प्रदेश संगठन प्रभारी बोले- लिखित में कोई आदेश जारी नहीं हुआ, अध्यक्ष बोले- मैं मेरा काम कर रहा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में कांग्रेस कार्यकाल (गांधी भवन) पर मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के स्वागत-सत्कार मामले में निलंबन झेल रहे शहर कांग्रेस अध्यक्ष सुरजीत सिंह चड्ढा और जिला कांग्रेस अध्यक्ष सदाशिव यादव का निलंबन अभी तक बरकरार है। दरअसल, इंदौर में 6 अगस्त को हुए कांग्रेस के जंगी प्रदर्शन के एक दिन पहले इंदौर शहर संगठन प्रभारी अवनीश भार्गव ने कहा था की दोनों ही अध्यक्षों का निलंबन समाप्त हो गया है। इसके बाद दोनों ही निलंबित अध्यक्षों ने जंगी प्रदर्शन के दौरान बाकायदा मंच पर अपनी मौजूदगी बतौर अध्यक्ष दर्ज कराई थी। लेकिन प्रदेश संगठन प्रभारी राजीव सिंह का कहना है कि निलंबन की समाप्ति का किसी तरह का आदेश संगठन ने जारी नहीं किया है।

पहले जो स्थिति थी वहीं स्थिति अभी भी बरकरार है। प्रदेश प्रभारी के निलंबन समाप्त नहीं होने वाले बयान को लेकर निलंबित शहर अध्यक्ष सुरजीत सिंह चढ्ढा का कहना है कि मुझे जो नोटिस मिला था, उसका जवाब मैं दे चुका हूं। जिसके बाद मैं मेरा काम कर रहा हूं। आगे लिखित में कुछ आएगा तब मैं उसका जवाब भी दे दूंगा।वहीं इस मामले को लेकर जिला अध्यक्ष सदाशिव यादव का कहना है कि मुझे इस विषय में अभी कुछ नहीं कहना है। आप संगठन पदाधिकारियों से ही बात करें।

इस वजह से दोबारा निलंबन की बात सामने आई

दरअसल, गांधी भवन में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हुए ध्वजारोहण के बाद दोनों ही अध्यक्षों के निलंबन का बखेड़ा दोबारा खड़ा हुआ है। कांग्रेस सूत्रों ने बताया कि अनुशासनहीनता का नोटिस पा कर निलंबित हुए शहर अध्यक्ष सुरजीत सिंह चड्ढा ने कांग्रेस कार्यालय पर 15 अगस्त को ध्वजारोहण किया था। लेकिन आयोजन के पहले कांग्रेस के कुछ पदाधिकारियों ने किसी वरिष्ठ कांग्रेसी से ध्वजारोहण करवाने की सलाह दी थी। जो बात चड्ढा ने नहीं मानी। इसकी शिकायत कुछ कांग्रेसियों ने प्रदेश कांग्रेस के साथ ही दिल्ली आलाकमान तक तक पहुंचा दी। जिसके बाद ही अब प्रदेश संगठन प्रभारी ने यह कहा है कि निलंबन अभी समाप्त नहीं हुआ है।

15 अगस्त को यह हुआ था गांधी भवन में

15 अगस्त को गांधी भवन में स्वतंत्रता दिवस समारोह आयोजित हुआ। इसमें मिठाई इंदौर दुग्ध संघ की ओर से बांटी गई जबकि अल्पाहार का प्रबंध पूर्व शहर अध्यक्ष प्रमोद टंडन ने किया। कार्यक्रम के संचालन की व्यवस्था कांग्रेस सेवा दल ने अपने हाथ में रखी। हर वर्ष शहर अध्यक्ष ही ध्वजारोहण करते हैं लेकिन इस वर्ष बदली स्थितियों के बाद अध्यक्ष को कहा गया कि किसी वरिष्ठ नेता से ध्वजारोहण कराया जाए। लेकिन चड्ढा ने नेताओं से कहा कि उन्होंने प्रदेश कांग्रेस से बात कर ली है और झंडा फहरा दिया।

इस कारण मिला था निलंबन को नोटिस

12 जुलाई को गांधी भवन कार्यालय में नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय समेत भाजपा नेताओं के स्वागत और गुलाब जामुन खिलाने के कारण दोनों अध्यक्षों को सस्पेंड किया गया था। बता दें, 7 से 14 जुलाई तक मंत्री विजयवर्गीय ने इंदौर शहर में 51 लाख पौधे रोपने की अपील की थी। इसमें सहयोग मांगने के लिए विजयवर्गीय कांग्रेस के गांधी भवन कार्यालय गए थे। यहां शहर अध्यक्ष सुरजीत चड्ढा और ग्रामीण अध्यक्ष सदाशिव यादव के नेतृत्व में विजयवर्गीय का हार-फूल से स्वागत किया गया। समोसे और गुलाब जामुन का नाश्ता भी कराया गया था।

यह लिखा था सस्पेंड नोटिस में- दोनों ही अध्यक्षों को जारी हुए नोटिस में कहा गया था कि एक ऐसा व्यक्ति (विजयवर्गीय) जिसने मां अहिल्या की नगरी में लोकतांत्रिक मूल्यों की हत्या की एवं इंदौर की जनता से उनके मत का अधिकार छीनने का कृत्य करके देश-विदेश में इन्दौर को शर्मसार किया, जिसकी निंदा इंदौर वासियों ने भी की। ऐसे व्यक्ति का स्वागत सत्कार इन्दौर जिला कांग्रेस कमेटी गांधी भवन में करना अनुशासन हीनता की श्रेणी में आता है।

एमबीए की चारों प्रमुख कॉलेजों की सीटें फुल

पहले राउंड में आईएमएस की 120 सीटों पर 157 अलॉटमेंट

इंदौर (एजेंसी)। डीटीई (डायरेक्टर ऑफ टेक्निकल एजुकेशन) ने सीमैट के आधार एमबीए की पहली एडमिशन लिस्ट जारी कर दी। खास बात यह रही कि पहले ही राउंड में चारों प्रमुख कॉलेजों की सीटें फुल हो गईं। इसमें देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के दो टीचिंग विभाग भी शामिल हैं। डीएवीवी के आईएमएस की 120 सीटों पर 157 अलॉटमेंट दिए गए। यहां 95 पर्सेंटाइल कटऑफ रहा। ये सभी छात्र तय समय पर फीस जमा कर एडमिशन पक्का कर सकते हैं। वहीं डीएवीवी के ही आईआईपीएस में भी कोर एमबीए की 60 सीटों पर 78 अलॉटमेंट दिए गए। 93.17 पर्सेंटाइल पर एडमिशन मिला। दो साल पहले ही एसजीएसआईटीएस द्वारा शुरू किए गए एमबीए कोर को अच्छा रिस्पांस मिला। यहां भी 60 सीटों पर 78 अलॉटमेंट दिए गए। यहां ओपनिंग रैंक 72 तो क्लोजिंग रैंक 110 रही। इसके अलावा शहर के एकमात्र बी-स्कूल में भी एडमिशन की खासी डिमांड रही और ज्यादातर सीटों पर अलॉटमेंट जारी कर दिए गए हैं। इन चार के अलावा बमुश्किल इक्का-दुक्का संस्थान रहे, जहां सीमैट के आधार पर अलॉटमेंट आए। इसमें जीएसीसी भी शामिल है। बाकी सभी कॉलेजों में ग्रेजुएशन की मेरिट के आधार पर ही अगले राउंड से अलॉटमेंट आएंगे। एमबीए में प्लेसमेंट सबसे अच्छा - जानकार कहते हैं कि एमबीए में सबसे ज्यादा प्लेसमेंट होने की वजह से एडमिशन की डिमांड ज्यादा है। ग्रेजुएशन आधार पर अगले राउंड में बाकी कॉलेजों की भी 70 प्रतिशत तक सीटें भर जाएंगी। डॉ. अनस इकबाल कहते हैं कि अच्छे प्लेसमेंट, क्वालिटी एजुकेशन की वजह से छात्रों का क्रैज एमबीए व उसके फायनेंस, मार्केटिंग, ऑपरेशन मैनेजमेंट व बिजनेस एनॉलिटिक्स जैसे स्पेशलाइजेशन की तरफ तेजी से बढ़ा है। फैकल्टी डॉ. उत्कृषा सोनी कहती हैं कि एमबीए व उसके स्पेशलाइजेशन के साथ ही पीजीडीएम के प्रति क्रैज बढ़ा है। क्वालिटी एजुकेशन, बेहतरीन प्लेसमेंट के कारण लगातार इसकी डिमांड बढ़ रही है और कट ऑफ भी बढ़ रहा है। रही और ज्यादातर सीटों पर अलॉटमेंट जारी कर दिए गए हैं। इन चार के अलावा बमुश्किल इक्का-दुक्का संस्थान रहे, जहां सीमैट के आधार पर अलॉटमेंट आए। इसमें जीएसीसी भी शामिल है। बाकी सभी कॉलेजों में ग्रेजुएशन की मेरिट के आधार पर ही अगले राउंड से अलॉटमेंट आएंगे।

नए राउंड के रजिस्ट्रेशन भी शुरू, 21 तक मौका

इधर, एमबीए कोर और उसके सभी स्पेशलाइजेशन कोर्स में एडमिशन के लिए ग्रेजुएशन आधार पर दूसरे राउंड के रजिस्ट्रेशन 16 अगस्त से शुरू हो गए, जो 21 तक चलेंगे। इसमें छात्र सीमैट के साथ ही ग्रेजुएशन के आधार पर भी आवेदन कर सकेंगे। ग्रेजुएशन की मेरिट के आधार पर 1 सितंबर को लिस्ट जारी होगी, जबकि 6 तक फीस भर सकेंगे। इंदौर के 76 कॉलेजों में 14 हजार से ज्यादा सीटें हैं। इस बार पीजीडीएम की भी खासी डिमांड रही है। हालांकि यह कोर्स बी-स्कूल्स व चुनिंदा कॉलेजों में ही चल रहा है।

आईवी सेट लगाने के बाद 6 की हालत बिगड़ी, एक की मौत

महू (एजेंसी)। शासकीय मध्यभारत अस्पताल में फिर इलाज में लापरवाही का मामला सामने आया है। यहां दिनभर में करीब 16 मरीजों को आईवीसेट की नई खेप चढ़ाई गई थी। इसके बाद छह से ज्यादा मरीजों ने तेज ठंड लगने की शिकायत की। वहीं पीथमपुर के मरीज महेन्द्र शर्मा की मौत हो गई। मौत किस वजह से हुई यह पीएम होने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा। यह सब देख कुछ मरीज इतने घबरा गए कि बगैर डिस्चार्ज लिए ही भाग गए। घटना की जानकारी मिलते ही एसडीएम चरणजीत सिंह हुड्डा व नायब तहसीलदार राधावल्लभ धाकड़ अस्पताल पहुंचे। अस्पताल प्रभारी डॉ. एचआर वर्मा का कहना है कि मरीजों को जो आईवीसेट लगाया जाता है, वह आज ही खोला गया था। गड़बड़ी किस वजह से हुई, उसकी जांच की जाएगी।

बिजली वितरण कंपनी अब सीएनजी वाहनों का उपयोग करेगी

कार्मिकों को चतुर्थ समय वेतनमान प्रदान किया जाएगा

इंदौर (एजेंसी)। मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर अब पर्यावरण हित में सीएनजी वाहनों का अपने क्रियाकलापों व विद्युत सेवाओ के दौरान उपयोग करेगी। इससे ईंधन खर्च घटेगा और पर्यावरण प्रदूषण में काफी कमी होगी। यह निर्णय कंपनी की शुक्रवार शाम पोलोग्राउंड स्थित प्रबंध निदेशक कार्यालय सभागार में हुए बोर्ड ऑफ डायरेक्टर की मिटिंग में लिया गया। इसमें अध्यक्षता कंपनी के पदेन चेयरमैन और प्रदेश के अपर मुख्य सचिव ऊर्जा मनु श्रीवास्तव ने की। इस दौरान कंपनी के कर्मचारियों, अधिकारियों के लिए 35 वर्ष की सेवा अवधि पूर्ण होने पर चतुर्थ समय वेतनमान देने का भी निर्णय लिया गया। इस दौरान कंपनी की पिछले वित्तीय वर्ष की आय, जारी वित्तीय वर्ष के प्रथम तीन माह की आय, नेशनल स्मार्ट ग्रिड मिशन के तहत इंदौर शहर में स्मार्ट ग्रिड योजना, उपभोक्ता सेवाओं, आरडीएसएस के कार्यों आदि पर भी चर्चा हुई। प्रबंध निदेशक अमित तोमर ने कंपनी क्षेत्र में विकास कार्यों, उपभोक्ता सुविधाओं, स्मार्ट मीटर से आए बदलाव व अन्य विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इंदौर में महिला को अश्लील इशारे कर किया परेशान

पुलिस ने शिकायत के बाद 51 साल के व्यक्ति पर केस दर्ज किया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में महिला को अश्लील इशारे कर परेशान करने वाले व्यक्ति की पुलिस को शिकायत की गई है। शिकायत के बाद आरोपी के खिलाफ पुलिस ने केस दर्ज किया है।एमआइजी थाना पुलिस ने 50 साल की महिला की शिकायत पर 51 साल के योगेश्वर तिवारी निवासी एलआइजी कॉलोनी के खिलाफ केस दर्ज किया है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि बीते 2-3 महीने से आरोपी उसे देखकर अश्लील हरकत करके परेशान कर रहा है। उसे देखकर गाना गाता है। सुबह जब वह घूमने जाती है तो घूरता है। उसे देखकर अश्लील हरकत करता है। 13 अगस्त को भी उसने अश्लील हरकत की। पति और बेटे ने उसे समझाया तो उन्हें गालियां दी। महिला की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कार्रवाई की बात कही है।

कावड़ लेकर जा रहे व्यक्ति को कार ने टक्कर मारी

मौत के 4 दिन बाद पुलिस ने कार चालक के खिलाफ दर्ज किया केस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर से कावड़ संघ के साथ कावड़ लेकर उज्जैन जा रहे 56 साल के व्यक्ति को कार चालक ने पीछे से टक्कर मार दी। घटना में व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस ने कार चालक के खिलाफ केस दर्ज किया है। घटना 11 अगस्त की है।बाणगंगा थाना पुलिस ने मृतक सुरेंद्र कुमार शर्मा उम्र 56 साल निवासी कोलकाता के मामले में ड्राइवर के खिलाफ धारा 106(1) बीएनएस में केस दर्ज किया है। घटना रेवती रेंज बीएसएफ गेट के पास सांवेर रोड पर 11 अगस्त की है। मस्त कावड़िया संघ के साथ मृतक कावड़ लेकर महाकाल मंदिर उज्जैन जा रहे थे। रेवती रेंज बीएसएफ गेट के पास सुबह करीब 5.40 बजे सफेद रंग की कार का चालक लापरवाही पूर्वक और तेज गति से कार को चलाकर लाया और सुरेंद्र शर्मा को पीछे से टक्कर मार दी। सुरेंद्र की मौके पर ही मौत हो गई।

बाल विवाह कानून को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई

इंदौर हाई कोर्ट ने ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड सहित अन्य को जारी किया नोटिस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति अरविंद धर्माधिकारी और न्यायमूर्ति दुप्पला वेंकट रमण ने शनिवार को एक महत्वपूर्ण जनहित याचिका (पीआईएल) में नोटिस जारी किए हैं। जिसमें राज्य में बाल विवाह को नियंत्रित करने वाले कानूनी ढांचे को चुनौती दी गई है। इस मामले को डॉ.अमन शर्मा द्वारा उच्च न्यायालय के समक्ष रखा गया और उनके पक्ष में अधिवक्ता अभिनव पी. धनोडकर ने बहस की। 4 सप्ताह में नोटिस का जवाब देने के निर्देश दिए हैं।

क्या है पूरा मामला

इस जनहित याचिका में मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) अनुप्रयोग अधिनियम, 1937 और बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006 के बीच के संघर्ष को उठाया गया है। याचिकाकर्ता का तर्क है कि मुस्लिम पर्सनल लॉ के प्रावधान, जो यौवन (आमतौर पर 15 वर्ष की आयु) में विवाह की अनुमति देते हैं, सीधे तौर पर बाल विवाह निषेध अधिनियम के साथ विरोधाभासी

हैं। महिलाओं के लिए विवाह की न्यूनतम कानूनी आयु 18 वर्ष और पुरुषों के लिए 21 वर्ष निर्धारित करता है। डॉ. शर्मा की ओर से बहस करते हुए अधिवक्ता धनोडकर ने नाबालिगों, विशेषकर युवा लड़कियों के अधिकारों पर इस कानूनी असंगति के गहरे प्रभाव को रेखांकित किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि कम उम्र में विवाह न केवल इन लड़कियों के स्वास्थ्य और शिक्षा को खतरे में डालता है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक असमानता और लैंगिक भेदभाव को भी बढ़ावा देता है।

याचिका में कहा गया है कि ऐसे विवाह संविधान में निहित मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं, जिसमें शिक्षा और स्वास्थ्य का अधिकार शामिल है। खंड पीठ ने प्रारंभिक बहस सुनने के बाद, प्रतिवादियों, जिसमें भारत संघ, कानून और न्याय मंत्रालय, महिला और बाल विकास मंत्रालय मध्य प्रदेश राज्य, महिला और बाल विकास विभाग गृह विभाग और ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड शामिल हैं को नोटिस जारी किया है। अदालत ने इन पक्षों को चार सप्ताह के भीतर अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। याचिकाकर्ता ने न्यायिक घोषणा की मांग की है, जिसमें बाल विवाह निषेध अधिनियम को विरोधाभासी पर्सनल लॉ पर प्रधानता देने की पुष्टि की जाए, साथ ही सभी समुदायों में विवाह की कानूनी आयु की समानता सुनिश्चित करने के लिए विधायी संशोधन का निर्देश भी दिया जाए। इसके अलावा, याचिका में मजबूत निगरानी और प्रवर्तन तंत्र, सार्वजनिक जागरूकता पहल और बाल विवाह से प्रभावित व्यक्तियों के लिए व्यापक समर्थन सेवाओं की स्थापना की मांग की गई है।

इंदौर में एडमिट चांदीपुरा वायरस के संदिग्ध मरीज की मौत

एक हफ्ते पहले जांच के लिए पुणे लैब भेजे गए थे सैंपल ; अब तक नहीं मिली रिपोर्ट

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में एडमिट चांदीपुरा वायरस के संदिग्ध मरीज 22 वर्षीय खरगोन निवासी युवक की मौत हो गई है। खरगोन सीएमएचओ डॉक्टर एमआर सिसोदिया ने इसकी पुष्टि की है। एक हफ्ते पहले उसका सैंपल जांच के लिए पुणे लैब भेजा गया था जिसकी रिपोर्ट अब तक नहीं आई हैं। रिपोर्ट आने के बाद अगर पुष्टि हो होती है तो यह मध्य प्रदेश में चांदीपुरा वायरस का पहला मामला होगा। मामला कसरावद क्षेत्र के पीपलगोन में रहने वाले 22 वर्षीय युवक का है। पिछले शनिवार को उसे इंदौर के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में एडमिट किया गया था। इस पर इंदौर स्वास्थ्य विभाग ने खरगोन सीएमओ को सूचना दी। इसके बाद स्वास्थ्य विभाग की टीम ने शनिवार दोपहर पीपलगोन में सघन सर्वे भी किया। यहां टीम को अन्य कोई संदिग्ध मरीज नहीं मिला था।

एक हफ्ते बाद भी स्पष्ट नहीं हो पाई स्थिति

चांदीपुरा वायरस के संदिग्ध मरीज का मामला सामने आने के बाद खरगोन सीएमएचओ डॉ. एमएस सिसोदिया और इंदौर सीएमएचओ डॉ. बीएस सेतिया ने कहा था कि मरीज चांदीपुरा वायरस सस्पेक्टेड है। एक सप्ताह में रिपोर्ट मिलने के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी। लेकिन जांच रिपोर्ट आने के पहले ही युवक की मौत हो गई।

इंदौर के पास गणपति घाट पर भीषण हादसा

उल्टी हुई तो युवती ने बस में से सिर निकाला, ट्रक की टक्कर से मौत

इंदौर (एजेंसी)। धामनोद के गणपति घाट पर हुए हादसे में राऊ निवासी रिया (18) पिता जगदीश जाधव की मौत हो गई। वह बहन पिंकी और भांजे रघु के साथ राखी के लिए खरगोन जा रही थी। उल्टी आने के कारण उसने घाट पर खिड़की से गर्दन बाहर निकाली थी, तभी हादसा हो गया। पिता ने बताया कि 14 अगस्त को रघु का जन्मदिन था। वह बहन के यहां ही रुकी थी। काकड़दा चौकी प्रभारी मिथुन चौहान ने बताया कि घाट पर गुरुवार दोपहर तेज गति से इंदौर की ओर से आ रहा ट्रक अनियंत्रित होकर छह कारों व बस को टक्कर मारते हुए कंटेनर से टकराया। इससे ट्रक व कंटेनर में आग लग गई। दुर्घटना में युवती की मौत हो गई। वहीं 4 अन्य लोगों को चोट आई।

सराफा में महिला के पर्स से सोने का हार चोरी

इंदौर के सराफा में महिला के पर्स से सोने का हार चोरी होने का मामला सामने आया है। बदमाश महिलाओं ने मौका पाकर पर्स में रखे हार पर हाथ साफ कर दिया। सराफा थाना पुलिस ने फरियादी मयूरी सेन उम्र 32 साल निवासी जूनी इंदौर की शिकायत पर दो अज्ञात महिलाओं के खिलाफ केस दर्ज किया है।

शेयर मार्केट इनवेस्टमेंट बताकर 5 लाख रु. हड़पे

डीमैट अकाउंट से हुई ठगी ; दो अकाउंट होल्डर्स पर एक्शन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की एमआईजी पुलिस ने उत्तर प्रदेश के एक युवक की शिकायत पर कार्रवाई की है। 4 मोबाइल नंबर और 2 अकाउंट होल्डर पर एक्शन लिया है। पुलिस के मुताबिक आरोपी ने मुनाफे के नाम पर डी-मेट अकाउंट खुलवाया था। रुपए दोगुना करने का झांसा देकर लोगों से लाखों रुपए ठगे थे।एमआईजी पुलिस के मुताबिक मोहम्मद इमरान पुत्र इकबाल अहमद निवासी बुदावा थाना घुपुर जिला प्रयागराज की शिकायत पर पुलिस ने मोबाइल नंबर और अकाउंट नंबरों के खिलाफ धोखाधड़ी की धाराओं में केस दर्ज किया है।

इमरान इंदौर के मालवा मिल इलाके की किंग होटल में ठहरा हुआ था। वह निजी कंपनी में कार्यरत है।उसने पुलिस को बताया आरोपियों ने बालाजी इक्विटी प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में शेयर मार्केट में रुपए लगाने की बात कही थी। 4 लाख 75 हजार की धोखाधड़ी की गई।

मुंबई और इंदौर के दिए थे पते

पुलिस के अनुसार, बालाजी कंपनी की तरफ से फरियादी इमरान को मुंबई के लोढ़ा सुप्रीम, डॉ. ई मोसिस रोड़ साउथ वर्ली नाका का पता दिया गया। वहां आफिस नहीं मिला। आसपास के लोगों से पूछताछ की तो इस तरह की कंपनी होने की बात से इनकार किया। यहां से अनूप नगर इंदौर का पता दिया गया।

इंदौर में कंसल्टेंट के साथ आयुष डॉक्टर्स ने संभाला ओपीडी

प्राइवेट अस्पतालों में ओपीडी बंद ; एडमिट मरीज और इमरजेंसी केस में ही हो रहा इलाज

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में शनिवार को भी जूनियर डॉक्टरों की हड़ताल के चलते आयुष विभाग और मेडिकल कॉलेज के दूसरे कंसल्टेंट को ओपीडी ड्यूटी पर लगाया गया है। इंदौर के सरकारी अस्पताल में सभी विभाग की ओपीडी शुरू है। वहीं प्राइवेट अस्पतालों की ओपीडी बंद रखी गई है जबकि एडमिट मरीजों का इलाज किया जा रहा है। जूनियर डॉक्टरों की हड़ताल के चलते सरकारी हॉस्पिटल में रोजाना की तुलना में आधे से कम मरीज पहुंचे। एमवाय अस्पताल की ओपीडी में रोजाना करीब 3 हजार पर्चियां कटती है, लेकिन शनिवार सुबह 11.30 बजे तक सिर्फ 25 पर्सेंट मरीज ही पहुंचे। एमवाय हॉस्पिटल के सुपरिनटैंडेंट डॉ अशोक यादव ने सुबह हॉस्पिटल में पहुंच व्यवस्थाओं का जायजा लिया और मरीज से बातचीत की। डॉ अशोक यादव ने कहा कि अभी सभी यूनिट में

कंसल्टेंट मरीजों को देख रहे हैं। फिलहाल समस्या जैसी कोई बात नहीं है। वहीं मध्य प्रदेश नर्सिंग होम एसोसिएशन के सेक्रेटरी डॉ. सुनील बारोड ने बताया कि सभी प्राइवेट अस्पतालों की ओपीडी बंद रखी गई है, जबकि एडमिट मरीजों का इलाज किया जा रहा है। शनिवार दोपहर एमजीएम मेडिकल कॉलेज के सामने जूनियर डॉक्टरों ने प्रदर्शन किया और कार्रवाई की मांग की। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ नरेंद्र पाटीदार ने कहा कि सरकार को डॉक्टरों की सुरक्षा पर कोई चिंता नहीं हैं। डॉक्टर प्रोटेक्शन एक्ट लाकर सभी जगह लागू करना चाहिए। जब तक कोई समाधान नहीं मिलता हमारा विरोध जारी रहेगा।दरअसल, कोलकाता रेप-मर्डर केस के विरोध में जूनियर डॉक्टरों के साथ मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन (एमटीए), इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के बाद अब नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन (एनआईएमए) मध्यप्रदेश, एमपी नर्सिंग होम एसोसिएशन, एमपी डेंटल एसोसिएशन सहित कई एसोसिएशन ने मैदान पकड़ लिया है। सभी ने 17 अगस्त को ओपीडी में केस नहीं देखेंगे की बात कही थी। इसी तरह सभी प्राइवेट डॉक्टर ने क्लिनिक भी बंद करने के साथ सिर्फ इमरजेंसी केस पर काम करने की बात कही थी।

यह है पूरा मामला

कोलकाता रेप-मर्डर केस में व्यापक विरोध शुरू हो गया है। जूनियर डॉक्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. नयन जैन ने बताया कि शनिवार को एमवाय अस्पताल, टीबी हॉस्पिटल, चाचा नेहरू, एमटीएच, पीसी सेठी, जिला अस्पताल सहित सभी सरकारी अस्पतालों में जूनियर डॉक्टरों के साथ कंसल्टेंट भी ओपीडी में सेवाएं नहीं देंगे। सरकारी अस्पतालों में कंसल्टेंट भी ओपीडी में सेवाएं नहीं देंगे। नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन मध्यप्रदेश ने हड़ताल का समर्थन किया है। साथ ही एनआईएमए से अनुरोध किया है कि वे आज सुबह 6 बजे से रविवार सुबह 6 बजे तक अपने क्लिनिक और अस्पताल बन्द रखें। एसोसिएशन ने युवा डॉक्टर की जघन्य हत्या की निंदा की। साथ ही कोलकाता सरकार से न्याय दिलाने और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कदम उठाने की मांग की है। प्रांताध्यक्ष डॉ. महेश गुप्ता ने कहा कि स्वास्थ्य पेशेवरों की सुरक्षा सर्वोपरि है। इससे समझौता नहीं किया जा सकता। द होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इंडिया, इंदौर भी विरोध में है। इंडियन डेंटल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. अमित रावत, अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन , जिला शाखा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र शर्मा ने बताया कि आज सुबह 6 बजे से 24 घंटे तक डॉक्टर्स सेवाएं नहीं देंगे। इस दौरान सभी प्राइवेट क्लिनिक बंद रहेंगे। उन्होंने कहा कि अगर अभी ठोस कदम नहीं उठाया तो यह विभीषिका किसी को भी निगल सकती है।

रक्षाबंधन विशेष

रमेश सर्राफ धमोरा
लेखक पत्रकार हैं।

अपनेपन का प्रतीक है रक्षाबंधन

भारत में रक्षाबंधन के पवित्र पर्व को बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। इसे रिश्तों में मिठास, विश्वास और प्रेम बढ़ाने वाला पर्व माना गया है। इस दिन बहनें भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं, और उसकी लंबी उम्र की कामना करती हैं। इस दौरान भाई भी अपनी बहन को रक्षा का वचन देता है, और क्षमता के अनुसार उसे उपहार देता है। रक्षाबंधन का पर्व भाई-बहिन के स्नेह का प्रतीक देश का एक प्रमुख त्यौहार है। रक्षाबंधन पर्व में रक्षासूत्र यानि राखी का सबसे अधिक महत्व है। इस पर्व के दिन बहनें अपने भाई को राखी बांधती हैं। श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाये जाने के कारण इसे श्रावणी पर्व भी कहते हैं। इस दिन ब्राह्मण, गुरु द्वारा भी राखी बांधी जाती है।

हिन्दू धर्म के सभी धार्मिक अनुष्ठानों में रक्षासूत्र बांधते समय पण्डित संस्कृत में एक श्लोक का उच्चारण करते हैं। जिसमें रक्षाबन्धन का सम्बन्ध राजा बलि से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। यह श्लोक रक्षाबन्धन का अभीष्ट मन्त्र है।

येन बद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो महाबलः
तेन त्वाम प्रतिबद्धनामी रक्षे माचल माचलः

इस श्लोक का अर्थ है जिस रक्षासूत्र से महान शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को बांधा गया था, उसी सूत्र से मैं तुझे बांधता हूं। तुम अपने संकल्प से कभी भी विचलित मत होना।

रक्षाबंधन का त्योहार कब शुरू हुआ यह कोई नहीं जानता। लेकिन भविष्य पुराण में इस पर्व का वर्णन मिलता है। जब देवताओं और दानवों में युद्ध शुरू हुआ। तब देवताओं पर दानव हावी होने लगे। देवराज इन्द्र ने घबरा कर देवताओं के गुरू बृहस्पति से मदद की गुहार की। वहां बैठी इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी सब सुन रही थी। उन्होंने रेशम का धागा मन्त्रों की शक्ति से पवित्र करके अपने पति के हाथ पर बांध दिया। संयोग से वह श्रावण पूर्णिमा का दिन था। लोगों का विश्वास है कि इन्द्र इस लड़ाई में इसी धागे की मंत्र शक्ति से ही विजयी हुए थे। उसी दिन से श्रावण पूर्णिमा के दिन यह धागा बांधने की प्रथा चली आ रही है। यह धागा धन, शक्ति, हर्ष और विजय देने में पूरी तरह समर्थ माना जाता है।

विष्णु पुराण के एक प्रसंग में कहा गया है कि श्रावण की पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु ने हयग्रीव के रूप में अवतार लेकर वेदों को ब्रह्मा के लिये फिर से प्राप्त किया था। हयग्रीव को विद्या और बुद्धि का प्रतीक माना जाता है। महाभारत में ही रक्षाबन्धन से सम्बन्धित कृष्ण और द्रौपदी का एक और वृत्तान्त भी मिलता है। जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई। द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाडकर उनकी उंगली पर पट्टी बांध दी। यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था। कृष्ण ने इस उपकार का बदला बाद में चीरहरण के समय उनकी साड़ी को बढ़ाकर चुकाया। कहते हैं परस्पर एक दूसरे की रक्षा और सहयोग की भावना रक्षाबन्धन के पर्व में यहीं से प्रारम्भ हुई।

महाभारत में भी इस बात का उल्लेख है कि जब युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण से पूछा कि मैं सभी संकटों को कैसे पार कर सकता हूं। तब भगवान कृष्ण ने उनकी तथा उनकी सेना की रक्षा के लिये राखी का त्योहार मनाने की सलाह दी थी। उनका कहना था कि राखी के इस रेशमी धागे में वह शक्ति है जिससे आप हर विपत्ति से मुक्ति पा सकते हैं। इस समय द्रौपदी द्वारा कृष्ण को तथा कुन्ती द्वारा अभिमन्यु को राखी बांधने के कई उल्लेख मिलते हैं।

स्कन्ध पुराण, पद्मपुराण और श्रीमद्भागवत में वामनावतार नामक कथा में रक्षाबंधन का प्रसंग मिलता है। दानवेन्द्र राजा बलि ने जब 100 यज्ञ पूर्ण कर स्वर्ग का राज्य छीनने का प्रयत्न किया तो इन्द्र आदि देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। तब भगवान विष्णु वामन अवतार लेकर ब्राह्मण का वेष धारण कर राजा बलि से

भिक्षा मांगने पहुंचे। गुरु के मना करने पर भी राजा बलि ने तीन पग भूमि दान कर दी। भगवान ने तीन पग में सारा आकाश, पाताल और धरती नापकर राजा बलि को पाताल लोक में भेज दिया। कहते कि पाताल लोक में राजा बलि ने भक्ति के बल पर भगवान विष्णु से रात-दिन अपने सामने रहने का वचन ले लिया। भगवान के घर न लौटने से परेशान लक्ष्मी जी को नारद जी ने एक उपाय बताया। उस उपाय का पालन करते हुए लक्ष्मी जी ने राजा बलि के पास जाकर उसे रक्षाबंधन बांधकर अपना भाई बनाया और अपने पति भगवान विष्णु को अपने साथ ले आयीं। उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी।

महाराष्ट्र राज्य में यह त्योहार नारियल पूर्णिमा या श्रावणी के नाम से विख्यात है। इस दिन लोग नदी या समुद्र के तट पर जाकर अपने जनेऊ बदलते हैं और समुद्र की पूजा करते हैं। इस अवसर पर समुद्र के स्वामी वरुण देवता को प्रसन्न करने के लिये नारियल अर्पित करने की परम्परा भी है। राजस्थान में रामराखी और चूड़ाराखी या लूंबा बांधने का रिवाज है। रामराखी सामान्य राखी से भिन्न होती है। इसमें लाल डोरे पर एक पीले छींटों वाला फुंदना लगा होता है। यह केवल भगवान को ही बाँधी जाती है। चूड़ा राखी भाभियों की चूडियों में बांधी जाती है। राजपूत योद्धा जब शत्रु से युद्ध करने जाते थे तब महिलाएं उनको माथे पर कुमकुम का तिलक लगाने के साथ हाथ में रेशमी धागा भी बांधती थी। इस विश्वास के साथ कि यह धागा उन्हे विजयश्री के साथ वापस ले आयेगा।

उत्तरांचल में इसे श्रावणी कहते हैं। ब्राह्मण अपने यजमानों को यज्ञोपवीत तथा राखी देकर दक्षिणा लेते हैं। अमरनाथ की अतिविख्यात धार्मिक यात्रा गुरु पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर रक्षाबंधन के दिन सम्पूर्ण होती है। कहते हैं इसी दिन यहां का हिमानी शिवलिंग भी अपने पूर्ण आकार को प्राप्त होता है। इस उपलक्ष्य में इस दिन अमरनाथ गुफा में प्रत्येक वर्ष मेले का आयोजन भी होता है। नेपाल के पहाड़ी इलाकों में ब्राह्मण एवं क्षत्रीय समुदाय में रक्षा बन्धन गुरू के हाथ से बांधा जाता है। लेकिन दक्षिण सीमा में रहने वाले भारतीय मूल के नेपाली भारतीयों की तरह बहन से राखी बंधवाते हैं।

नोबेल पुरष्कार विजेता कवि रवींद्रनाथ टैगोर ने 1905 में बंगाल विभाजन का विरोध करने के लिए इस त्योहार को मनाने को प्रोत्साहित किया था। वह इस त्योहार के माध्यम से विभिन्न समुदायों के बीच एक मजबूत संबंध बनाना चाहते थे। उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों को एक-दूसरे के हाथों पर राखी बांधने के लिए प्रोत्साहित किया, जो भाईचारे और अपने समुदाय के लिए प्यार का प्रतीक है। इस त्यौहार का जश्न ब्रिटिश शासकों और बंगाल के विभाजन और हिंदुओं और मुसलमानों के बीच मतभेदों के खिलाफ एक शक्तिशाली प्रयास था।

रक्षाबन्धन पर्व सामाजिक और पारिवारिक एकबद्धता का सांस्कृतिक उपाय रहा है। विवाह के बाद बहन पराये घर में चली जाती है। इस बहाने प्रतिवर्ष अपने सगे ही नहीं अपितु दूरदराज के रिश्तों के भाइयों तक को उनके घर जाकर राखी बांध कर अपने रिश्तों का नवीनीकरण करती रहती है। समाज के विभिन्न वर्गों के बीच भी एक सूत्रता के रूप में इस पर्व का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार जो कड़ी टूट गयी है उसे फिर से जागृत किया जा सकता है।

रक्षाबंधन भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति इतनी लचीली है कि इस में हर संस्कृति समाहित होती चली जाती है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, सौराष्ट्र से असम तक देखें तो यहां के लोग प्रतिदिन कोई न कोई त्योहार मनाते मिलेंगे। इन त्योहारों के मूल में आपसी रिश्तों के बीच मधुरता घोलने एवं सरसता लाने की भावना रहती है। भाई-बहन के बीच प्यार, मनुहार व तकरार होना एक सामान्य सी बात है। लेकिन रक्षा बंधन के दिन बहन द्वारा भाई के हाथ में बांधे जाने वाले रक्षा सूत्र में भाई के प्रति बहन के असीम स्नेह और बहन के प्रति भाई के कर्तव्यबोध को पिरोया गया है।

लघुकथा

राखी का गिफ्ट

दीपक कुमार

मधु आज काफी खुश नजर आ रही है, हो भी क्यों न आज रक्षाबंधन जो है। वह सुबह से ही तैयार होकर थाली सजाएं बैठी है, लेकिन लाडले भैया घर में ही नहीं हैं। 'मां भैया कहां हैं? दस बजने वाले हैं, मैं सुबह से ही उनका इंतजार कर रही हूं' मधु ने मां से गुस्से में पूछा। 'अरे परेशान क्यों हो रही हो? मार्केट गया है आता ही होगा।' तभी तरुण थैला लिए घर में प्रवेश करता है। 'भैया कहां थे आप अबतक? मेरी सहेलियां कब का अपने भाईयों को राखी बांध चुकी है, और आप हैं कि मिस्टर इंडिया बन रहे हैं' तरुण ने मुस्कुराते हुए थैला टेबल पर रखा 'अच्छा बाबा सॉरी तुझे वेट

कराने के लिए, आज मार्केट में बहुत भीड़ थी न इसलिए देर हो गई, चल अब जल्दी से राखी बांध।' मधु झट से थाली लेकर आयी, बड़े प्यार से आरती दिखाई, तिलक लगाई और राखी बांधकर अपने प्यारे भैया को मिठाई खिलाई। 'चलो भैया जल्दी से मेरा गिफ्ट निकालो, इस बार सौ-दो में नहीं मानने वाली' मधु ने बड़े रौब से कहा। तरुण ने मुस्कुराते हुए थैला उठाया और बॉक्स निकालकर मधु के हाथों में पकड़ा दिया। 'स्मार्टफोन.... यह मेरे लिए है? सच में, भैया यू आर सो स्वीट' मधु के खुशी का ठिकाना न रहा। 'ठीक ठीक है, ज्यादा खुश होने की जरूरत नहीं है,यह फोन तुम्हें इसलिए दिलाई है कि तुम देश के टॉप शिक्षकों से ऑनलाइन पढ़ सको और अपने सपने को पूरा कर सको, और हां इस फोन में एक भी सोशल मीडिया नहीं होनी चाहिए।' तरुण ने हिदायत देते हुए कहा। 'ओके बड़े भैया, आपकी छोटी बहना आपको एक भी शिकायत का मौका नहीं देगी और जल्द ही इस परिवार की पहली सदस्य बनेगी जिसने नीट क्लियर किया हो।' मधु ने तरुण को गले लगा लिया, इन दोनों भाई बहन के प्यार को देखकर मां को अपने छोटे भाई की याद आ गई, जो भारत मां की सेवा करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गया।

कहानी

अबके बरस

रमेश रंजन त्रिपाठी

गाँव में शाम घिरने से पहले आंगन में सूख रहे कपड़े समेटते समय बहू को आसमान में बादलों के जमावड़े को देख याद आ गया कि आषाढ़ खत्म होने में ज्यादा दिन नहीं बचे हैं। आषाढ़ के बाद सावन लग जाएगा। उसके मन में फिर एक आस जगी कि इस बार सावन में भैया उसे लेने जरूर आएँगे, पिछले तीन सालों से तो नहीं आए। वह तरस जाती थी राखी बांधने के लिए। भैया के आने या न आने की पक्की खबर न मिलने से किसी के हाथों राखी भेजने की व्यवस्था भी नहीं हो पाती थी।

वह जानती है, पूरे सावन उसे अपने वीरन के आने का इंतजार रहेगा। हर आहट पर लगेगा कि भगवान करे उसके पीहर से कोई आया हो। मायके का ख्याल आते ही लड़कपन उसे अपने गाँव के घर में ले गया। वह आम के पेड़ में पड़े झूले पर खड़े होकर पींगें भरने लगी। उसे माई हमेशा घर के कामकाज सीखने के लिए टोका करती थीं, उसकी चोटी बनाते हुए धाराप्रवाह लड़कियों के कर्तव्यों पर भाषण देतीं और एक आदर्श गृहणी के लक्षण सिखाया करतीं। माई की बातों में, स्वर में और आँखों में उसे एक अनजानी शंका, भय और चिंता की झलक का अहसास हुआ करता था। लेकिन उनके प्यार में कोई कमी न थी। भले ही दिखाई न दे परंतु माई के प्यार को वह स्पष्ट रूप से महसूस किया करती थी। और, बापू की तो वह लाडो थी ही। वे भी अपने जिगर के टुकड़े के भविष्य को लेकर चिंतित रहते थे मगर उसे पता नहीं चलने देते थे। रही भाई की बात, तो वह उसका गार्जियन बनने की कोशिश करता और दोस्त तो था ही। भाई-बहन आपस में झगड़ते भी थे और एक-दूसरे पर जान भी छिड़कते थे। घर के कामों में माई का हाथ बँटाना, स्कूल जाना, सहेलियों के संग खेलना-कूदना, इन्हीं सब में समय पंख लगाकर उड़ता गया। माई और बापू को वह सयानी लगने लगी और एक दिन एक राजकुमार बारात लेकर आया और उसे डोली में बिठाकर अपने घर ले गया।

उसे सासू माँ और ससुर जी मिल गए। ननद और देवर मिले और अपना जीवनसाथी भी। वह नए परिवेश में खुद को ढालने की कोशिश करने लगी लेकिन मन के एक कोने में जहाँ माई, बापू और भैया का स्थायी निवास था, वहाँ यादों का आना-जाना लगा रहता था। दिन में कई बार वह उस

कोने में झांक आती थी। वह ससुराल में माई, बापू, बहिनी, सहेली को तलाशती और अंत में मन को मसोसकर कामों में व्यस्त रहने लगती। माँ बनने के बाद भी उसने बहुत प्रयत्न किया कि अपने हृदय का पूरा एरिया नये संसार को दे दे परंतु सफलता नहीं मिली। दिल के एक हिस्से में पीहर ने अपना कब्जा कभी नहीं छोड़ा।

शुरू में बापू और फिर भैया उसे लेने आते रहे। समय बीतने के साथ उनका आना कम हो गया। शादी-विवाह जैसे कामों में और रक्षाबंधन पर उसे लेने भैया आ जाते थे। पिछले तीन सालों से राखी पर भी कोई लेने नहीं आया था। सावन के आते ही उसे अपने मन में पीहर जाने की हूक को नकली मुस्कान से दबाने की कड़ी मशक्कत करनी पड़ती थी।

उसे रह रहकर शादी के बाद पहली बार सावन में मायके जाने की घटना याद आने लगी। वहाँ पहुँचकर वह कितनी खुश थी! अपनी ससुराल की गरिमा की ठसक को सँभाले पुराने दिनों के खिलंदड़पन को खोजती वह चहकती फिरती। दोस्तों से मिलती, गलियों में घूमती, नदी पर जाती, पनघट से जल भर लाती, खेतों का चक्कर लगाती। याद आता, पानी बरसने पर टपकते छप्पर से बचना, कड़ाके की ठंड में अलाव तापना और सड़ी गर्मी में हाथ से पंखा झलते हुए दोपहरी बिताना कितना आनंददायक होता था! वह कुछ दिनों के लिए पीहर में रहकर गुजरे समय को फिर से महसूस करना चाहती थी, अपने लाड़ले बेटे को नाना, नानी, मामा, मामी और अनेक नए रिश्तों से परिचित कराने के लिए बेचैन थी। तभी द्वार खुलने की आवाज से उसकी व्यग्रता भंग हो गई। ससुर जी अंदर आ रहे थे। वह सिर के पल्लू को आगे खिसकाकर एक ओर हो गई।

'बहू! तुम्हारे पीहरवाले अगले हफ्ते तुम्हें लेने आना चाहते हैं,' ससुर जी ने अंदर जाते हुए रुककर उसे बताया- 'हमने स्वीकृति दे दी है। अपनी और मुन्ना के जाने की तैयारी कर लो।' घूँघट के लाख प्रयत्नों के बाद भी तेजी से अंदर जाती बहू के मनोभावों को उसके कदमों की चाल छिपने नहीं दे रही थी।

कहानी

जीवन पथ

पल्लवी श्री जोशी

जीवन पथ पर चलना है तो,
बाधाओं से लड़ना होगा।

आंधी में भी अविचल रहकर,
तुफानों में अड़ना होगा।

अंधकार से ना घबराओ,
ज्वालाओं से आँख मिलाओ,

अग्नी पथ पर चलकर तुमको,
ज्योती पुंज सम बढ़ना होगा।

लहरों से तुम डर ना जाना,
सैलाबों में तुम डट जाना,

लहरों से टकराकर ही तो,
जीवन सागर तरना होगा।

अंगारों पर कदम बढ़ाना,
कांटों से भी तुम भिड़ जाना,

संघर्षों से तप कर तुम को,
कंचन सा निखरना होगा।

रक्षाबंधन पर विशेष

प्रभुनाथ शुक्ल

उपहार

प्रज्ञान न जाने किस उधेड़बुन में खोया-खोया सा था। उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। दो-तीन दिन से उसने खाना भी ठीक से नहीं खाया था। बस मौन, खुद से बातें करता और बार-बार आसमान को निहारता। प्रज्ञान के भीतर चल रहे इस संघर्ष को पत्नी सरला अच्छी तरह समझती थी। वह पढ़ी-लिखी महिला थी। लेकिन वह भी बेबस थी।

'देखो ! प्रज्ञान इस तरह काम नहीं चलेगा। आपकी उदासी मुझसे देखी नहीं जाती। मैं आपके भीतर चल रहे संघर्ष को समझती हूँ। मैं आपकी धर्मपत्नी हूँ। तुम्हारे हर सुख -दुःख की सहभागी हूँ। मैं जानती हूँ आपकी नौकरी नहीं रही। बच्चों की पढ़ाई और घर के खर्चे, गृहस्थी चलाना मुश्किल हो रहा है। हमारे पास कोई विकल्प भी नहीं है। धन के नाम पर हमारे पास एक कौड़ी नहीं है। रक्षाबंधन का त्योहार करीब है। मीना दीदी कल आपको राखी बाँधने आएंगी। लेकिन आपके पास उन्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है। जब तक बाबूजी थे वे हमें संभालते रहे, लेकिन अब वे इस दुनिया में नहीं रहे।'

सरला ने एक गहरी सांस ली और बुझी निगाहों से उसकी ओर देखा 'मैं सब समझती हूँ प्रज्ञान, लेकिन आप चिंता मत कीजिए। सब ठीक हो जाएगा, आप इतने उदास मत होइए। आपकी उदासी मुझसे नहीं देखी जाती।'

सरला की आवाज में एक दर्द था एक पत्नी का दर्द, 'आप मेरी जिंदगी और मेरी उम्मीद है। आपका विचलित होना मुझे अंदर से तोड़ता है। आज जब हमारा बुरा वक्त आया तो हमें कोई नहीं पूछता। मुझे आज भी याद है, मेरे बाबू जी के इस दुनिया से जाने के बाद मायके की स्थिति खराब हो गई थी। आपने मेरे मायके की गिरी हालत को अपनी सूझ-बूझ से सम्भाला और आज आपकी वजह से ही वे कहाँ से कहाँ पहुँच गए। आपके सहयोग की वजह से ही आज मेरे भाई सफलता की ऊंचाइयों पर है पर आज उन्हें अपने दीदी और जीजा चूसे हुए गन्ने की तरह लगते हैं।'

सरला का स्वर निराशा से भर गया, 'आपने मेरे भाइयों के लिए क्या कुछ नहीं किया। लेकिन मेरे हालात पर आज किसी को भी तरस नहीं आता। कहते हैं नजर से दूर तो दिल से भी दूर, लोग एक कॉल भी नहीं करते। भाभियाँ कॉल उठाने से कतराती हैं।कहीं सरला उनसे कुछ मांग न ले पर लोग यह भूल जाते हैं अगर सुख एक जगह टिककर नहीं रहता तो दुख भी एक जगह टिककर नहीं रहता। प्रज्ञान मेरे पास एक उम्मीद है। अगर आप चाहे तो हमारी सगाई के समय आपने मुझे जो अंगूठी पहनाई थी मीना दीदी को रक्षाबंधन के अवसर पर उपहार स्वरूप दें दे।'

'लेकिन सरला ! तुम्हारे तो सारे आभूषण मेरी नौकरी छूटने के बाद गृहस्थी चलाने के लिए बिक गए

थे। यह एक अंतिम निशानी बची है वह भी...नहीं... नहीं ऐसा नहीं हो सकता।मैं ऐसा नहीं कर सकता।'

प्रज्ञान ने अपने आप को इतना लाचार कभी महसूस नहीं किया था। उसके चेहरे पर दर्द की लकीरें उभर आई। सरला ने उसके हाथों को अपने हाथ में लेकर कहा आपकी खुशी से बढ़कर मेरे लिए यह अंगूठी नहीं है।'

प्रज्ञान गहरी सोच में डूब गया 'सरल! मेरी बहन मेरी मीना बहुत समझदार है। वह हमारे हालात के बारे में सब कुछ जानती है। मैं सब संभाल लूँगा, तुम चिंता मत करो। राखी पैसों का नहीं दिलों और रिश्तों का त्यौहार है। फिर इस दुनिया में समय का मारा सिर्फ मैं अकेला प्रज्ञान थोड़े हूँ जो बहन को राखी बांधने के बाद उपहार में कुछ नहीं दे पाएगा। मेरे जैसे लाखों भाई हैं।'

प्रज्ञान यादों के गलियारे में घूमने लगा। मीना को बचपन में मिट्टी के खिलौने बेहद पसंद थे। प्रज्ञान गाँव के मेले से मीना के लिए मिट्टी के खिलौने जरूर लाता। उसे आज भी याद है मीना जब शादी के बाद ससुराल जाने लगी तो वह अपने भाई प्रज्ञान से लिपट कर खूब रोई। इस घर से विदा लेते वक्त उन खिलौनो को प्रज्ञान को देते हुए उसने कहा था।

'भइया ! इसे मेरी धरोहर समझना, यह महज़ खिलौने नहीं इनमें मेरा दिल बसता है। यह हम दोनों भाई-बहन के अटूट स्नेह की निशानी है। इस मिट्टी में मेरे भाई का प्यार बसता है। भइया वायदा करो इन्हें कभी मिट्टी समझ कर फेंक मत देना। इन्हें संभाल कर रखना एक दिन तुम्हें मेरी इस धरोहर को लौटना होगा।यह तुम्हारी बहन की थाती है।'

प्रज्ञान ने अपनी बहन मीना के उन खिलौनो को पच्चीस साल बाद भी संभाल कर रखा रखा था। आज वह उस नायाब तोहफ़े को सीने से लगा कर खूब रोया था। लेकिन उसे एक तसल्ली मिली थी कि राखी की बधाई में प्रज्ञान, मीना को उसकी थाती उपहार में देगा। अब उसकी चिंता दूर हो गयी थी। उसके चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट उभर आयी थी।

इंतजार की घड़ियां खत्म हुई, आखिर आज वह दिन आ गया। आज राखी का त्योहार था। राखी बांधने का शुभ मुहूर्त सुबह आठ बजे तक ही था। लिहाजा मीना समय से पहुँच गयी थी। मीना का विवाह एक समृद्ध परिवार में हुआ था, उसके पति आई पी एस अधिकारी थे। लिहाजा वह अच्छी और मंहगी गाड़ी से आयी थी। उसके साथ नौकर-चाकर भी थे। गाड़ी से उतरने के बाद मीना सीधे घर में पहुँच गई। साथ आए नौकरों ने मिठाइयाँ, बच्चों के खिलौने, उपहार और खाने-पीने के सामान अंदर पहुँचा दिए। अपनी बुआ मीना को देखकर बच्चे बहुत खुश हो गए थे।

प्रज्ञान को देखते ही मीना गले से लिपट गयी। प्रज्ञान मीना को अपनी जान से भी अधिक प्यार करता था। मीना एक मेधावी छात्रा थी,अपनी छोटी सी पूंजी में भी प्रज्ञान ने रात-दिन मेहनत करके उसे कंप्यूटर साइंस से इंजीनियरिंग कराई थी। सच कहूं तो इंजीनियर बनने का सपना सिर्फ मीना का नहीं था प्रज्ञान का भी था जिसे उसने रात दिन मेहनत करके पूरा कराया था।मीना की पढ़ाई और शादी में प्रज्ञान ने बहुत खर्च भी किया था। वह अपनी बहन की हर मांग हर जिद्द को पूरा भी करता था। मीना आज एक मल्टीनेशनल कम्पनी में मैनेजर थी। यह सब प्रज्ञान की वजह से ही संभव हो पाया था। वह भी प्रज्ञान को वह दिलों जान से प्यार करती है। उसे एक काँटा भी चुभ जाया करता है तो वह तड़प उठती। प्रज्ञान की नौकरी छूटने के बाद उसकी आर्थिक स्थिति से वह अच्छी तरह परीचित थी।

'अरे! प्रज्ञान दीदी आई हैं,आप उनका स्वागत नहीं करेंगे या बस खड़े-खड़े आँसू ही बहाते रहेंगे।'

बहन मीना को देखकर उसकी आँखें कब भर आई थी यह बात प्रज्ञान को पता भी नहीं चली थी। उसने रुमाल के कोर से अपने आँसुओं को पोछा 'दीदी मुहूर्त निकल जाएगा, मैं तैयार हूँ। मेरी प्यारी बहन अब तू जल्दी से मुझे राखी बांध।'

प्रज्ञान की पत्नी ने राखी और दीप की थाल मीना को देते हुए कहा 'लीजिए दीदी!'

प्रज्ञान का तिलक चंदन और आरती करने के बाद राखी बाँध दिया। अब प्रज्ञान की बारी थी मीना की थाल में उपहार देने की लेकिन प्रज्ञान के हाथ काँपने लगे। उसका गला भर आया। मीना से वह आँखें नहीं मिला पा रहा था। लेकिन वह मजबूर और बेबस था। न चाहते हुए भी उसने उपहार में मीना को खिलौने की पोटली उसके हाथों में पकड़ा दी।

'दीदी! मेरे इस अमूल्य उपहार को यहाँ मत खोलना।'

शर्मिंदगी से वह सर ऊपर नहीं उठा पा रहा था पर मीना ने उसकी बातों को नहीं माना। मीना की आँखें भर आईं।उसने आँखों से गिरते आँसुओं को पोछते हुए कहा।

भईया! यह मेरा अधिकार है। मैं तो यहीं देखूंगी कि मेरे लाडले भाई ने राखी में अपनी लाडली को क्या दिया है।

प्रज्ञान के सामने ही मीना ने खिलौनों के झोले को खोला। खिलौने, मिट्टी के खिलौने मीना के सामने बचपन की न जाने कितनी यादें उभर आई। मीना खुशी से नाच उठी। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। वह बचपन के दिनों में खो गई। जैसे उसे जन्नत की खुशियाँ मिल गयीं हों। उन खिलौनों को वह बार-बार चूम रहीं थीं जैसे उसे दुनिया का सबसे श्रेष्ठ उपहार मिल गया हो। उसने प्रज्ञान को गले से लगा लिया। बहन की खुशी देख प्रज्ञान की आँखों से आँसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। वह जाने किस अतीत में खो गया था। सच कहते हैं लोग लड़कियों के लिए मायके की मिट्टी भी सोना होती है।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

स्वतंत्रता के परिप्रेक्ष्य में कला एवं कलाकार

सृजन बंधनों से परे की बात होती है, विधा कुछ भी हो पर जकड़ में रहते हुए उसके पास से भी नहीं फटका जा सकता है। अधीनता हीनता को जन्म देती है जो कला और कृतियों हेतु शुभ नहीं माना जा सकता। कलाकृतियाँ स्वतंत्रता की माँग करती हैं, किसी शासक या धर्म विशेष के अधीन रहकर कृतियाँ बनाई तो जा सकती हैं पर सृजित नहीं की जा सकती। सृजन हेतु कलाकार का स्वतंत्र होना बहुत ही जरूरी होता है। आज भी जो कहीं किसी कंपनी में रहकर सृजन करने के भ्रम में रहते हैं सच पूछिए वो बस भ्रम में ही जी रहे होते हैं क्योंकि वो किसी के अधीन होकर उसके बताए निर्देशों को मशीन की भाँति बस पूरा कर रहे होते हैं। देखा जाए तो उसके भीतर का कलाकार कहीं दब गया होता है तब जाकर वह ऐसा कार्य कर पा रहा होता है न कि कृतियाँ सृजित कर रहा होता है।

कलाकार स्वतंत्रता के साथ मनमानी करते हुए माध्यम, धरातल, विषय वस्तु सभी के साथ अध्ययन करते और खेलते हुए कुछ नया रच जाता है और वहाँ होता है सृजन। भारतीय कला जोगीमारा, अजंता, बाघ आदि-आदि तक तो बहुत ही समृद्ध रही है, आगे भी बहुत समय तक रही पर धीरे-धीरे संकट के बादल मंडराते गए और समय के साथ कला और कलाकारों को भी संकटों के दौर से गुजरना पड़ा। कलाकारों को उन पर हुकूमत करने वालों के हुक्म का पालन करना पड़ा और वही बनाना पड़ा जो हुक्मरानों की ख्वाहिश थी। कोई भी शाषक अपनी अच्छाइयों को ही सबके सामने लाना चाहता है और फिर वो किसी भी विधा और माध्यम के साथ ही क्यों न हों। साहित्य में भी वही रचा बसा गया जो ऊपर से चाहा गया। राजा अपने रानी की सुंदर तस्वीर बनवाना चाहे तो कलाकारों की पूरी फेहरिस्त उसे पूरा करने में लग जाने को आतुर दिखती थी कारण उनको उनके रीढ़ की हड्डी से वंचित रखने का धीरे-धीरे अभ्यास कराया जा चुका था। उन सभी के लिए यही कला थी।

फिलहाल देश आजादी के अमृत महोत्सव के बाद का उत्सव मना रहा है, अतः हम इधर बीच की ही बात करेंगे। सबीह, अलंकरण, युद्ध, महल, हाथ में लिए पक्षियों के चित्र या कह सकते हैं जो भी शौक चिल्ला उठा शासकों का, वही चित्र बनाना होता था कलाकारों को। युद्ध में सेना के साथ कलाकारों को भी ले जाया जाता था और चित्र बनवाया जाता था, ऐसे ही तमाम जगहों पर उनको ले जाकर चित्र बनवाए जाते थे। कलाकार तो खुश हो जाते थे कि मैं तो इतने बड़े कार्य हेतु चुना गया हूँ जबकि वो भूल जाते थे कि आप सब कुछ कर रहे हो मसलन चित्र बना रहे हो, डिजाइन तैयार कर रहे हो, सुंदर-सुंदर रंगों के साथ रह रहे हो पर सृजन नहीं कर रहे हो। सृजन करने वाला तो कहीं रमता जोगी बहता पानी सा खुद में ही खुद को ढूँढ रहा होगा। वो शासक, प्रशासक के अधीनता को स्वीकार ही नहीं सका होगा बल्कि कहीं जाकर भूखों मर रहा होगा पर चित्र न बनाकर वो सृजन कर रहा होगा। ऐसे कलाकारों की संख्या भी बहुतायत में थी जिनका जिक्र स्वतंत्रता के बाद हुआ भी है।

देश पर संकट के बादल तो थे ही यहाँ के लोग खुली हवा में खुशी के साथ साँस भी नहीं ले पा रहे थे ऐसी स्थिति में कलाकारों से भी, जिनका फर्ज होता है समाज को बहुत कुछ देकर जाना, से कुछ विशेष उम्मीद नहीं जग पा रही थी। किसी विशेष विद्रोह के केंद्रबिंदु में कलाकार कभी नहीं रहे। सत्तावन के विद्रोह के आस-पास के समय में जो कला विद्यालय खुलें वहाँ कला को लेकर थोड़ी अलग बात जरूर दिखी पर लंदन की अकादमिक शैली वहाँ भी हाबी रही। काफी समय तो छात्रों को अपने दिशा को समझने में गुजर गये। यहाँ भी पूर्व की भांति ही वही प्रवृत्ति चली। शिकंजे के साथ कलाकारों को बस वही सीखना होता था जो उन्हें सिखाया जाता था और सिखाया वही जाता था जो वो

चाहते थे। उनके देश, उनके कलाकार, उनके कृतियों को श्रेष्ठ बताने का जद्दोजहद जारी था। हालांकि उस समय भी कुछ कलाकार जरूर रहे होंगे जो वहाँ जाकर उनके बताए अनुरूप चित्र न बनाकर अपने हिसाब से सृजन करने में लगे रहे होंगे ये बात अलग है कि उन पर किसी की निगाह नहीं गई होगी। अजंता, बाघ जैसों के अनुकृतियों के बाद या कह सकते हैं हैवेल तथा अवनींद्रनाथ के तमाम प्रयासों के बाद स्थिति बदलने लगी थी। कला में भारतीयता वापस आने लगी थी, जोर-शोर से बदलाव की बयार बहने लगी थी।

भारत में पुनर्जागरण काल नाम से प्रसिद्ध बंगाल शैली का बोलबाला चारों तरफ हो गया था। कुछ कलाकार ऐसे भी थे जिनके यहाँ दासता, त्रासदी, भुखमरी, आजादी जैसे विषय भी रहे पर संख्या कम ही रही। समकालीन कला के विकास को हम 1940 के आसपास से मान सकते हैं, उसके बाद तो लगातार परिवर्तन होता रहा, कृतियों के विषयों एवं माध्यमों में विविधता की बाढ़ सी आ गई। समय बदला-बदला सा लगने लगा। देश स्वतंत्रता का स्वाद चख रहा था। सूरज जो पहले भी निकलता था पर अपना नहीं लगता था, अब तो मुस्कराते हुए निकलने लगा था, जिससे हम भारतवासी अब मुस्कराकर, आँख से आँख मिलाकर बतिया सकते थे। कलाकारों में भी एक अलग प्रकार का ही उत्साह देखा जाने लगा था। बहुत कुछ परिवर्तन होने लगा था। कलाकार प्रदोष दास एवं साथियों के प्रयास से कलकत्ता ग्रुप- 43, सूजा, आरा, रजा हुसैन आदि के प्रयास से प्रोग्रेसिव आर्ट ग्रुप, इधर दिल्ली में दिल्ली शिल्पी चक्र जैसे तमाम समूहों ने कला की दुनिया में धूम सी मचा रखे थे। आजादी के बाद सरकार भी तमाम संस्थानों के माध्यम से कला पर काम करने लगी थी, सरकार का साथ मिलते ही पंख जो पहले से ही लगे हुए थे और उड़ने को तैयार हो रहे थे और मजबूत इरादों के साथ उड़ और आगे बढ़ रहे थे।

कलाकार तो तमाम रहे पर प्रदर्शन के बल पर बाजार के नब्ज को पकड़ने वाले कलाकार मकबूल फिदा हुसैन ही हो सके जिनको अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचाना जाने लगा था। अब तक विषय विशालता की तरफ बढ़ चुका था। अमूर्तन कलाकारों को नये राह दिखा रही थी। अमृता शेरगिल बहुत ही कम समय में भारतीय कला को बहुत ही ऊंचाई प्रदान करके जल्दी ही विदा हो चुकी थी। रवि वर्मा भी अलग ही अपनी पहचान के साथ रहे। गायतोंडे, सूजा, रजा, तैयब मेहता, रामकुमार जैसे कई और कलाकार पिछले मान्यताओं एवं तकनीकियों को दरकिनार करते हुए आगे बढ़ रहे थे। आधुनिकता की शुरुआत हो चुकी थी। आकृतियाँ दायरे से बाहर खुलकर यात्रा कर रहीं थीं, सिर्फ और सिर्फ भाव प्रधान कृतियाँ भी बनने लगीं थीं, जितना संभव हो सकता था कलाकार उन्मुक्तता की ओर अग्रसर थे। अच्छी बात ये रही कि दर्शक भी कलाकारों से जुड़ने लगे थे, बाजार भी मजबूत होने लगा था। प्राइवेट गैलरियाँ भी अच्छी खासी भूमिका में थीं। बिकाश भट्टाचार्जी, सतीश गुजराल, ए. रामचंद्रन, जे. स्वामीनाथन, मंजीत बावा जैसे कलाकार फलक के विस्तार को तमाम झंझावातों से मुक्त करते हुए दर्शकों तक बिल्कुल और बिल्कुल नये रूप में पहुँच रहे थे। विवान सुंदरम, सुबोध गुप्ता, अतुल डोडिया, अर्पणा कौर, अर्पिता सिंह, लतिका कट्ट, सुज़ाता बजाज जैसे कलाकारों ने तो कला की दुनिया में क्रांति सी ला दिए थे। आये दिन प्रयोगों का दौर शुरू हो गया था। कलाकृतियाँ चित्र, मूर्ति से ऊपर उठकर इंस्टालेशन तक पहुँच गई थीं और अब तो कई ऐसे माध्यम आ गये हैं कि आने वाले समय में कलाकृतियाँ कहाँ तक पहुँच सकती हैं कह पाना मुश्किल होगा। गोगी सरोज पाल, अनुपम सूद, नंद कात्याल, जोगन चौधरी, जतिन दास, जय झरोटिया, धर्मेंद्र राठौर, निवेदिता मिश्रा, प्रभाकर कोल्टे, विनय शर्मा जैसे और भी कई नाम हैं जिनके कृतियों पर जिक्र की दरकार है और जिनकी कृतियाँ बहुत ही सारगर्भित तरीके से फलक को विस्तारित करती हैं।

जन्मदिन पर विशेष

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

दिलों पर राज करने वाले गुलजार

गुलजार भारतीय गीतकार, कवि, पटकथा लेखक, फिल्म निर्देशक तथा नाटककार हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा से कागजों पर लफ्जों को एक नई शक्ल, एक नई जिन्दगी, एक नई संवेदना एवं एक नई जिजीविषा को रचते हुए न केवल भारत बल्कि दुनिया के लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त की है। वे हिन्दी गीतों एवं संवादों के ऐसे राजकुमार हैं, जिन्होंने 88 साल के होकर भी युवा-सी ताजगी के साथ श्रोताओं दिलों पर राज किया है। उन्होंने बोलचाल की भाषा में शायरी करते हुए, गीत एवं संवाद लिखते हुए अपने सृजन से यौवन की दहलीज वालों के लिये प्रेम को जीवंतता दी है तो जवानी पार कर चुके बुजुर्गों के लिये जीने का नया अंदाज देकर प्रभावित किया है। उनके गीतों में श्रृंगार रस, लेखनी में संवेदनाएं एवं आत्मा में अध्यात्म-रस बसा हुआ है। वे ऐसे गीतकार, संवाद लेखक एवं शायर हैं, जिनके जीवन की चादर पर सकारात्मकता, संवेदना एवं प्रेम के रंग बिखरे हुए है। गुलजार दार्शनिक कवि-गीतकार हैं तो सनातन सत्य एवं जीवनमूल्यों को सहजता से उद्घाटित करने वाले जादूगर भी है।

सम्पूर्ण सिंह कालरा उर्फ गुलजार का जन्म 18 अगस्त 1936 में दीना, झेलम जिला, पंजाब में हुआ था, जोकि अब पाकिस्तान में है। गुलजार अपने पिता की दूसरी पत्नी की इकलौती संतान हैं। उनके पिता का नाम माखन सिंह कालरा और माँ का नाम सुजान कौर था। जब गुलजार बेहद मासूम और छोटे थे तभी उनकी माँ का निधन हो गया। देश के विभाजन के वक्त इनका परिवार पंजाब के अमृतसर में आकर बस गया। वहीं से गुलजार मुंबई चले आए। मुंबई आकर उन्होंने एक गैरेज में बतौर मैकेनिक का काम करना शुरू कर दिया एवं खाली समय में शौकिया तौर पर कवितायें लिखने लगे। इसके बाद उन्होंने गैरेज का काम छोड़ हिंदी सिनेमा के मशहूर निर्देशक बिमल राय, हृषिकेश मुखर्जी और हेमंत कुमार के सहायक के रूप में काम करने लगे। गुलजार की शादी तलाकशुदा अभिनेत्री राखी गुलजार से हुई हैं। हालांकि बेटी के जन्म के बाद गुलजार एवं राखी अलग हो गये। लेकिन गुलजार और राखी ने कभी भी एक-दूसरे से तलाक नहीं लिया। उनकी एक बेटी हैं-मेघना गुलजार जोकि एक फिल्म निर्देशक हैं।

अपनी सोच एवं कलम की जादूगरी से गुलजार सिनेमा की दुनिया और सिनेमा प्रेमियों के जीवन का एक

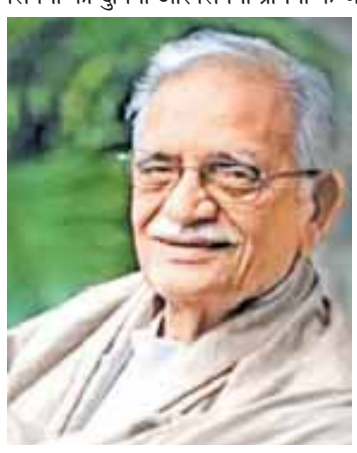

जरूरी हिस्सा बन गये हैं। गुनगुनाते गीतों एवं संवादों में जीवन एवं संवेदनशील किरदारों में अपना अक्स देखनेवाले दर्शक न गुलजार की फिल्मों को भूल सकते हैं और न ही गीतों को। वे प्रेम भरे गाने लिखते हैं तो भक्तिमय भी। 'मोरा गोरा अंग लइ ले, मोहे श्याम रंग दे दई... सिनेमा की चमक-दमक में वे श्याम रंग की चाहत को भी उकेर देते हैं। स्क्रीन प्ले लिखते हैं तो आनंद जैसी फिल्म जिसका नायक हंसते-हंसते पल-पल करीब आती मौत के लिए तैयार नजर आता है। फिल्म बनाते हैं तो वो 'आंधी' और 'मौसम' की शक्ल में सामने आते हैं, जहां संवेदनाओं का ज्वार अपने चरम पर नजर आता है। टीवी सीरियल की बात होती है तो मिर्जा गालिब को जीवंत कर देते है। मिर्जा गालिब टीवी धारावाहिक की हैसियत कुछ वैसी है जैसे बड़े पर्दे पर मुगले-आजम की बनी थी। बच्चों के लिए लिखा तो जंगल जंगल बात चली है, पता चला है, चड्डी पहनकर फूल खिला है, बच्चों की जिन्दगी का अहम हिस्सा बन गया।

गुलजार बंटवारे के दौर की हिंसा को सालों तक नहीं भूल पाए। तब वे ग्यारह-बारह साल के थे। अपनी आंखों के सामने उन्होंने सैकड़ों लोगों का कत्ल होते देखा था। लाखों लोगों को रातोंरात उजड़ने की भयावहता भी उनके दिलोदिमाग में घर कर गयी थी। कच्ची उम्र के जख्म जिंदगी भर नहीं जाते। गुलजार के अंदर भी यह पूरा हादसा किसी खतरनाक मंजर की तरह उबलता रहता है, सालता रहता है।

तभी तो गुलजार लिखते हैं- आंखों को वीजा नहीं लगता, सपनों की सरहद होती नहीं, बंद आंखों से रोज मैं सरहद पार चला जाता हूं। माचिस फिल्म बनाते हैं तो उनका दर्द कुछ यूं छलक आता है- छोड़ आए हम वो गलियां, छोड़ आए हम वो गलियां।। लेकिन गुलजार इसी दर्द से सिमटे भर नहीं रहे। वे कहते हैं, वक्त के साथ समझ में आया कि कम कहने में ज्यादा अर्थवत्ता है। ज्यादा कहने से अर्थ ही निस्तेज हो जाते हैं। इसलिए यही गुलजार जब मस्ती के मूड में आते हैं तो बखूबी लिख डालते हैं- गोली मार भेजे में, भेजा साला शोर करता है। यही गुलजार जब प्रेम कविता लिखते हैं- तुम्हारे गम की डली उठा कर, जुबां पर रख ली है देखो मैंने। वह कतरा कतरा पिघल रही है, मैं कतरा कतरा ही जी रहा हूं।

खूबसूरती एवं जीवन के रंगों को हम प्रतीकों में पहचानते आए हैं और प्रतीक देश-काल, समाज-संस्कृति, जीवन एवं सोच, राजनीतिक माहौल के साथ बदलते रहते हैं। लेकिन गुलजार जैसे प्रेम और सौन्दर्य के महान् गीतकार अपनी काबिलीयत से जब नये रंग भरने लगता है तो जनमानस में व्याप्त खूबसूरती के पैमाने खुद-ब-खुद बदलने लगते हैं। गुलजार के पूरे जीवन में ये साफ नजर आता है कि समय के साथ वे खुद को बदलते रहे। उनका फोकस कभी डगमगाता नहीं दिखा, वह भी तब जब उनके अपने जीवन में 'आंधी' आ गई थी। दरअसल, आज से यही कोई 50 साल पहले 18 अप्रैल, 1973 को गुलजार और राखी ने आपस में प्रेम विवाह किया था। इस शादी में उस वक्त की भारतीय सिनेमाई दुनिया के तमाम दिग्गज शरीक हुए थे। गुलजार के जीवन के पन्नों पर टंके हैं जीवन के, जिजीविषा के, सृजन के, संघर्ष के मंजर। जो हर कोण से एवं हर मोड़ से कुछ नया एवं विलक्षण करता रहा है। उनका हिंदी सिनेमा में करियर बतौर गीत लेखक एस. डी. बर्मन की फिल्म बंधिनी से शुरू हुआ। साल 1968 में उन्होंने फिल्म आशीर्वाद का संवाद लेखन किया। इस फिल्म में अशोक कुमार नजर आये थे। इस फिल्म के लिए अशोक कुमार को फिल्मफेयर बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड भी मिला था। इसके बाद उन्होंने कई बेहतरीन फिल्मों के गाने लिखे जिसके लिए उन्हें हमेशा आलोचकों और दर्शकों की तारीफें मिली। साल 2007 में उन्होंने हॉलीवुड फिल्म स्लमडॉग मिलेनियर का गाना जय हो लिखा। उन्हें इस फिल्म के ग्रैमी अवार्ड एवं सर्वश्रेष्ठ गीत का ऑस्कर पुरस्कार मिल चुका है। उन्हें 2004 में भारत के सर्वोच्च सम्मान पद्म भूषण से भी नवाजा जा चूका है। गुलजार अनेक पुरस्कार और सम्मान से नवाजे जा चूके हैं। जिनमें प्रमुख हैं- 5 राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, 22 फिल्मफेयर अवार्ड्स, 1999 से 2000 तक के लिए मध्य प्रदेश सरकार से राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान प्राप्त, साल 2008 में सर्वश्रेष्ठ मूल गीतों के लिए अकादमी पुरस्कार, 2010 में एक ग्रैमी अवार्ड, 2002 में उर्दू के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2013 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार आदि।

बतौर निर्देशक भी हिंदी सिनेमा में अपना बहुत योगदान दिया हैं। जिनमें उनकी प्रमुख फिल्में हैं-मेरे अपने, परिचय, कोशिश, अचानक, खुशबू, आँधी, मौसम, किनारा, किताब, अंगूर, नमकीन, मीरा, इजाजत, लेकिन, लिबास, माचिस, हु तू तू। उन्होंने अपने निर्देशन में कई बेहतरीन फिल्में दर्शकों को दी हैं। जो लीक से हटकर होने के कारण दर्शकों के द्वारा सराही गयी है और उनके दिलों में बस गयी है। जिन्हे दर्शक आज भी देखना पसंद करते हैं। उन्होंने बड़े पर्दे के अलावा छोटे पर्दे के लिए भी काफी कुछ लिखा है। जिनमे दूरदर्शन का शो 'जंगल बुक' भी शामिल है। ख्याति के ऊंच शिखरों पर आरूढ़ गुलजार का जीवन प्रेरक, सहज एवं सादगीमय है। मुंबई में रहने के बाद भी गुलजार तड़के पाँच बजे उठ जाते हैं। कहते हैं सूर्य उन्हें जगाए उससे पहले वे सूर्य को जगाना चाहते हैं। टीवी पर टेनिस और क्रिकेट का मैच आ रहा हो तो गुलजार कोई दूसरा काम नहीं करते। इन खासियतों के अलावा सार्वजनिक जीवन में गुलजार के व्यक्तित्व के दो अहम पहलू और भी हैं। शांत और सौम्य नजर आने वाले गुलजार हमेशा सफेद कपड़ों में ही दिखाई देते हैं, जिसने उन्हें एक स्वतंत्र पहचान दे दी है। गुलजार हम सबके चहेते हैं तो अपने गीतों के लिए, अपनी फिल्मों के लिए। अपनी शायरी और कविताओं के लिए। अपनी कहानियों के लिए। अपनी जिंदादिली के लिए।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

सांस्कृतिक टकराव पर बनी सिरीज - लाईफ हिल गई

मौलिक सोच, मौलिक लेखन और मौलिक फिल्म अथवा वेबसिरीज़ अब एक सपना है। इसी स्थिति के चलते कनाडा की एक चर्चित टीवी सिरीज है, 'शिट्स क्रीक' जिसमें शहर से परेशान एक परिवार वापस आकर अपने गाँव के करीब बसता है। शहरी रईसों की जीवन शैली से स्थानीय बाशिंदों की जीवन शैली और विचारों का टकराव होता है। करीब करीब इसी विचार पर बनी है वेबसिरीज़ 'लाइफ हिल गई'। सिरीज के कथ्य के बारे में यह कह गया कि यह खुद निर्माता अरुषि निशंक का है। वैचारिक स्तर पर शहरी और ग्रामीण जीवन मूल्यों की इस टकराहट में हास्य तत्व की प्रचुरता है और यह एक सम्भावनाशील कथ्य भी है लेकिन अरुषि ने जिस कार्यकारी निर्माता अपूर्वा बजाज को इस सिरीज का क्रिएटिव हेड बनाया है, उन्होंने सिरीज की आत्मा समझे बगैर ही इस कहानी के साथ प्रयोग किया और नतीजतन इस कथ्य पर बनी वेबसिरीज़ पिट गई ।

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर इसी माह नौ अगस्त को रिलीज इस वेबसिरीज़ की प्रसारण की पहेली भी उस उलझे धागे के मानिन्द है जिसके छोर की तलाश बेहद कठिन है। डिज्नी प्लस हॉटस्टार के सालाना ग्राहक जिन्होंने इसका सब्सक्रिप्शन बीते साल ही ले लिया था उन्हें इस बात का बड़ा अचरज होता है जब ओटीटी प्लेटफार्म पर उनसे कुछ और पैसे माँगे जाते है। ओटीटी प्लेटफार्म के यही हाल है 'वूट' के सालाना सब्सक्रिप्शन का भी न जाने क्या हुआ उसका भी ओर-छोर नहीं मिल रहा है। आशंका तो यही है कि जहाँ वूट गया, वहीं डिज्नी हॉटस्टार भी जा सकती है। हालात यह हैं कि डिज़्नी प्लस हॉटस्टार वाले इस फेर में अपनी वेबसिरीज़ का प्रचार करना भी भूल गये। निर्माता ने खुद अपने पैसे से मुम्बई में इसकी प्रेस कांफ्रेंस की। सिरीज बस बनानी थी सो बना दी। किसी ने लगता है इसे देखा ही नहीं। ग्राहकों की चिन्ता न हॉटस्टार की तरफ से गौरव बनर्जी, नेहा सिन्हा और कर्ण गुप्ता ने की और न ही हिमश्री फिल्म्स की तरफ से अपूर्वा बजाज ने। इसे देखते देखते दर्शकों की भी लाइफ हिल गई।

वेबसिरीज़ की कहानी एपीसोड दर एपीसोड दो अलग-अलग कथ्य के साथ आगे बढ़ती है। एक कथ्य बहन-भाई की शिकायतों और शरारतों के साथ इनके पिता और उनके पुराने स्टाफ की तरंग के आसपास बुना गया है। दूसरा कथ्य आधुनिक विचार वालों और पारम्परिक विचार वालों गाँव वालों के टकराने से जुड़ा है। इन दो आयामों के साथ कहानी आगे बढ़ती है और एक बिन्दु पर जहाँ उनका तालमेल बैठता है वहाँ हास्य का स्वतः प्रस्फुटन रोचक है। मूल रुप से यह सिरीज एक कॉमेडी सीरीज मानी जा सकती है। अपूर्वा बजाज के मार्गदर्शन में इसे लिखा है, जसमीत सिंह भाटिया, सुप्रीत कुंदर और अक्षेंद्र मिश्रा ने। कथ और अकथ के अज़ीब तालमेल में डूबते-उतराते सिरीज़ के कुल छः एपीसोड को देखना अपने आप में किसी चुनौती से कम नहीं है। सिरीज़ पहाड़ों की ही एक बेटी ने बनाई है यह लगता नहीं है। अरुषि चाहतीं तो इसे उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति में रची बसी एक ऐसी सिरीज बना सकती थी, जो बाहर से आने वालों को अपने सूबे की सुंदरता अपनी आँखो से दिखाने की कोशिश करते हैं, लेकिन इस देवभूमि से अनजान लेखक और उनकी लिखी अनगढ़ पटकथा, छह एपीसोड की ये सिरीज आखिर तक पहुँचते पहुचँते बोर कर देती है।

इस वेबसिरीज़ में विनय पाठक जैसे सुयोग्य और शानदार अभिनेता को एक शराबी की भूमिका देकर उनकी अभिनय क्षमता का कहीं कोई कायदे का उपयोग नहीं किया है। निर्देशक प्रेम मिस्त्री की यह सबसे बड़ी खामी है। दिव्येंदु का अपना एक अलग ही आभामण्डल है। कहते हैं 'इक्कीस तोपों की सलामी' वह अब भी अपने हर भूमिका के लिये चाहते हैं मगर इस सिरीज़ में गाँव वाली बनी मुक्ति मोहन की भूमिका उन पर भारी पड़ी है। असल में मुक्ति मोहन ने ही इस पूरी सिरीज में सधा हुआ और संतुलित अभिनय किया है। दिव्येंदु और कुशा कपिला दोनों की ओवरएक्टिंग का एक दूसरे से कम्पटीशन ही चलता रहता है। कबीर बेदी बस कम्प्यूटर के बदलते स्क्रीन पर नमूदार होते रहते हैं। हेमंत पांडे जैसे कलाकार को अरसे बाद देख आस बधी थी कि कुछ बेहतर वह इस बार कर दिखाएंगे लेकिन उनका किरदार भी कमजोर स्क्रिप्ट और खाँचे में बंधे चरित्र चित्रण का शिकार हो गया है। सिरीज की न तो कहानी में दम है और न ही इसकी पटकथा या इसके संवादों में। शहर से गांव पहुँचे लोगों की सांस्कृतिक टकराव की इस कहानी को यदि निर्माता-निर्देशक साध लेते तो यह एक उत्कृष्ट वेबसिरीज़ होती । कतिपय निर्मल हास्य रस वाले दृष्य को छोड़कर सिरीज़ में कुछ भी खास नहीं है।

कोलकाता में डॉक्टर की गैंगरेप कर हत्या का विरोध

पीड़ित के परिवार को मिले सम्मानजनक मुआवजा, एक घंटे तक ओपीडी बंद रखकर किया प्रदर्शन

बैतूल। कोलकाता में 9 अगस्त को आरजीकर मेडिकल कॉलेज में युवा पोस्ट ग्रेजुएट महिला चिकित्सक के साथ गैंगरेप कर नृशंस हत्या करने के विरोध में आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे के नेतृत्व में बैतूल जिले के शासकीय एवं निजी डॉक्टरों ने काली पट्टी बांधकर विरोध प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रपति के नाम कलेक्टर को एक ज्ञापन सौंपा है। कलेक्टर को सौंपे ज्ञापन में उल्लेख किया गया है कि पूरे प्रकरण में साक्ष्यों से छेड़छाड़, विश्वसनीय कानूनी जांच ना होना, दोषियों के विरूद्ध कार्यवाही हेतु कोलकाता में प्रदर्शन करने वाले चिकित्सकों पर उग्र भीड़ द्वारा सुनियोजित रूप से आक्रमण करने से चिकित्सा सेवा से जुड़े सभी लोग अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। इस हृदय विदारक घटना के बाद लंबे समय तक आरोपी का कानून की पहुंच से बाहर रहना, सरकार द्वारा चिकित्सकों की मांगों को नकारना, घटना के बाद भी चिकित्सकों की सुरक्षा हेतु केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा कुछ न किए जाने से चिकित्सा जगत से जुड़े सभी व्यक्ति क्षुब्ध है।

डॉक्टरों ने केंद्र एवं राज्य सरकार से मांग की है कि डॉक्टरों पर हिंसा रोकने के लिए केंद्रीय कानून बने, जिसमें 2019 के प्रस्तावित हॉस्पिटल प्रोटेक्शन बिल में एपिडेमिक डिजीज एक्ट 1897 में 2023 में किए गए संशोधन शामिल हो। अस्पतालों में एयरपोर्ट की तरह सुरक्षा प्रोटोकॉल हो। सुरक्षा सुविधाओं के साथ अस्पतालों को सेफ जोन घोषित किया जाए। सीसीटीवी-सिक्योरिटी गार्ड के प्रोटोकॉल का पालन हो। कोलकाता रेप-मर्डर की पीडित 36 घंटे की ड्यूटी पर थीं। आराम के लिए कोई जगह नहीं थी। अस्पतालों में डॉक्टरों के लिए रेस्टिंग एरिया बनाया जाए। कोलकाता रेप-मर्डर केस की एक तय समय सीमा में प्रोफेशनल जांच हो। आरोपियों को कड़ी सजा मिले। पीड़ित के परिवार को सम्मानजनक मुआवजा मिले।

डॉ. योगेश पंडाग्रे सचिव जिला शाखा-बैतूल, डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय अध्यक्ष सहित डॉ. ब्रजेश खण्डागरे, डॉ. दीप साहू, डॉ. मनोज अग्रवाल, डॉ. रंजीत राठौर, डॉ. आदर्श यादव, डॉ. प्रदीप रघुवंशी, डॉ. रेणुका गोहिया, डॉ. नरेश सरदार, डॉ. सौरभ

कपूर, डॉ. बसंत श्रीवास्तव, डॉ. आशीष मानकर, डॉ. वरूण उपाध्याय, डॉ. ऋषभ शर्मा, डॉ. मनीष अलेक्जेंडर, डॉ. जगदीश घोरे, डॉ. आनंद मालवीय, डॉ. रानू वर्मा, डॉ. श्याम सोनी, डॉ. नितिन राठी, डॉ. स्मिता राठी, सहित अन्य डॉक्टर उपस्थित थे।

दामजीपुरा में भी काली पट्टी बांधकर जताया विरोध, एक घंटे तक ओपीडी बंद रखकर किया प्रदर्शन- दामजीपुरा दू पश्चिम बंगाल में महिला डॉक्टर साथ हुई घटना को लेकर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र दामजीपुरा में डाक्टरों ने हाथ में पट्टी बांधकर दोपहर 12 से 1 तक ओपीडी का सारा काम बंद रखकर विरोध प्रदर्शन किया। डॉ पंकज उइके ने बताया कि डॉ. मौमिता देबनाथ जूनियर मेडिकल कालेज कलकत्ता में गेंग रेप कर हत्या की गई है एवं डॉक्टरों के साथ मारपीट कर तोडफोड़ की गई है। इस घटना को लेकर पूरे मध्यप्रदेश में विरोध प्रदर्शन और हड़ताल की जा रही है।

डॉक्टरों ने मांग की है कि भविष्य में महिला डॉक्टर के साथ ऐसी घटना न हो और ऐसे हत्यारों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए जिससे भविष्य में ऐसी घटना न हो, ऐसे मामलो में डॉक्टरों को प्रोटेक्शन भी मिलना चाहिए। इस घटना के विरोध में डॉ पंकज उइके के समर्थन मे सभी स्वास्थ्य टीम ने भी हाथों में काली पट्टी बांधकर एवं इस हड़ताल में समर्थन दिया गया।

सीएमएचओ ने संभाली अस्पताल की व्यवस्था- बंगाल में महिला डॉक्टर के साथ हुई घटना को लेकर बैतूल जिला अस्पताल में डॉक्टर ने भी काली पट्टी बांधकर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान दोपहर 12 से 1 बजे तक ओपीडी का सारा काम बंद रहा। डॉक्टरों की हड़ताल के चलते जिला अस्पताल पहुंचकर सीएमएचओ डॉ. रविकांत उइके ने वार्डों का राऊंड किया एवं ओपीडी में मरीजों से मुलाकात कर व्यवस्थाएं बनाने का प्रयास किया।

पाढर चिकित्सालय ने पीजीटी छात्रा की क्रूरतापूर्ण हत्या पर जताया विरोध, रैली निकाल कर दिया ज्ञापन

बैतूल। कोलकाता की पीजीटी छात्रा के साथ हुए दुर्व्यवहार और क्रूरतापूर्ण हत्या के विरोध में पाढर चिकित्सालय ने 17 अगस्त को ओपीडी सेवाएं बंद रखी और एक शांतिपूर्ण रैली निकाली। इस प्रदर्शन के माध्यम से राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा गया, जिसमें दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई और चिकित्सा कर्मियों की सुरक्षा की मांग की गई। रैली में

चिकित्सक, स्टाफ और ग्रामवासियों ने भाग लिया, जो अस्पताल से शुरू होकर पुलिस चौकी तक पहुंची और राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा गया, जिसमें दोषियों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई की मांग की गई। रैली से पूर्व अस्पताल के प्रांगण में एक छोटा सा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें चिकित्सकों और स्टाफ ने स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और विशेष रूप से महिलाओं की सुरक्षा को लेकर अपने विचार रखे।

पाढर अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. राजीव चौधरी ने कहा कि यह घटना सिर्फ एक छात्रा के साथ नहीं, बल्कि पूरे चिकित्सा समुदाय के साथ हुई है, और इसने सभी को झकझोर कर रख दिया है। उन्होंने राष्ट्रपति से आग्रह किया कि वह इस मामले में विशेष संज्ञान लें और दोषियों को सख्त से सख्त सजा दिलवाएं। ज्ञापन में यह भी कहा गया कि चिकित्सा कार्यों से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं की सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही, भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सख्त उपाय लागू करने की भी मांग की गई है।

अम्बेडकर वार्ड पार्षद ने की नाली की सफाई

सुबह सवेरे सोहागपुर। अम्बेडकर वार्ड पार्षद हेमलता मोहन कहार ने आखिरकार थक हार कर खुद वार्ड की नालियों की सफाई की। इस मामले में उनके पति पूर्व कांग्रेसी पार्षद मोहन कहार ने सोशल मीडिया पर नगर पंचायत परिषद की

नाकामी पर कटाक्ष करते नाली सफाई के चित्र एवं वीडियो डालकर कहा है कि, हमनें कई बार नगर पंचायत परिषद से आग्रह कर रहे हैं कि। सफाई व्यवस्था में सुधार करें।जब लम्बा अरसा बीतने के हमें खुद सफाई करनी पड़ी। इस संबंध में मोहन कहार ने बताया कि हमने नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के चुनाव को न्यायालय में चुनौती दी हुई है। इसी कारण हमें तरह तरह से परेशान किया जा रहा है। ताकि हम चुनोती वापिस ले-ले। इधर नगर में डेंगू मच्छर ने भी दस्तक दे दी है। फिर भी सफाई व्यवस्था में कोताही बरती जा रही है।

सी.एम.राईज स्कूल में एनसीसी कैडेटों ने मनाया स्वतंत्रता दिवस

सुबह सवेरे सोहागपुर। सी.एम.राईज़ एसजेएल स्कूल में 13 एमपी बटालियन एनसीसी नर्मदापुरम सोहागपुर के एनसीसी कैडेटों ने किया पौधा रोपण। इसके साथ नगर में निकली प्रभात फेरी निकाली। इस अवसर पर एनसीसी प्रभारी डॉ.रामकुमार पाठक, महेश रघुवंशी,प्रियांशु धारसे, पायलट रोहित मेहरा,अजय मालवीय, जिसाब उइके के अलावा कैडेट भी उपस्थित थे।

श्री राम फार्मेसी कॉलेज में मनाया 78वां स्वतंत्रता दिवस

बैतूल। श्री राम फार्मेसी कालेज में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर समिती अध्यक्ष श्रीमती सुशीला देवी अग्रवाल व सरवेश अग्रवाल (समिती सदस्य) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर

पर समिति सचिव मोहन अग्रवाल, संचालक ध्रुवप्रकाश अग्रवाल, श्रीमती अंजना अग्रवाल, श्रीमती अर्चना अग्रवाल एवं प्राचार्य श्रीमती रोशनी खातरकर व सभी स्टाफ की उपस्थिति में कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर अध्यक्ष श्रीमती सुशीला देवी अग्रवाल द्वारा कदम के वृक्ष का पौधारोपण किया गया। सभी स्टाफ एवं छात्रों के द्वारा भक्ति गीतों की प्रस्तुति दी गई। प्राचार्य श्रीमती रोशनी खातरकर द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान एवं उनके विचारों को प्रस्तुत किया गया।

अंबेडकर बीएड कॉलेज में मनाया आजादी का महापर्व

बैतूल। बीआर अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय बैतूल में 78 वें स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की संरक्षक एवं संस्थापिका श्रीमती सुशीला देवी अग्रवाल द्वारा झंडा फहराया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के संचालक ध्रुव अग्रवाल, मोहन अग्रवाल एवं समस्त बीएड स्टाफ उपस्थित रहा। कार्यक्रम में बीएड प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने गीत, गायन भाषण एवं नाटक में भाग लिया।

धूमधाम से निकली खाटू श्याम निशान पदयात्रा

बैतूल। रिंगस राजस्थान से खाटू श्याम बाबा दरबार के लिए भव्य निशान पदयात्रा निकाली गई। श्री खाटू श्याम युवा सेवा समिति कोसमी बैतूल के अध्यक्ष अरूण चढ़ोकार ने बताया कि निशान पदयात्रा बैतूल में मंदिर कार्य पूरा करने की कामना को लेकर निकली जिसमें जिले से एक सैकड़ा से अधिक श्रद्धालुओं का जत्था शामिल हुआ।

चौकीदार ही निकला चोर

वेकोलि का सुरक्षा प्रहरी ही करवाता था चोरी, हुआ गिरफ्तार

बैतूल। सारणी-पाथाखेड़ा क्षेत्र में खदानों पर चोर गिरोह आए दिन धावा बोलते हैं। कई बार सुरक्षा प्रहरियों पर हमले कर या उनको बंधक बनाकर भी बेशकीमती सामान वे चुरा ले जाते। अब इस मामले में एक हैरतअंगेज खुलासा हुआ है। सुरक्षा को तैनात एक सुरक्षा प्रहरी ही चोरों को सुराग देता था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले के खुलासे पर लोग यह कहते हुए भी नजर आ रहे है कि बागड़ ही चर रही थी खेत..।

सारणी-पाथाखेड़ा क्षेत्र में खदानों पर चोर गिरोह आए दिन धावा बोलते हैं। कई बार सुरक्षा प्रहरियों पर हमले कर या उनको बंधक बनाकर भी बेशकीमती सामान वे चुरा ले जाते हैं। अब इस मामले में एक हैरतंगेज खुलासा हुआ है। सुरक्षा को तैनात एक सुरक्षा प्रहरी ही चोरों को सुराग देता था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले के खुलासे पर लोग यह कहते हुए भी नजर आए कि बागड़ ही चर रही थी खेतकृ। पुलिस ने प्रेस नोट जारी कर इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा खदानों में हो रही चोरियों के संबंध में थाना प्रभारी सारणी अरविंद कुमरे एवं पाथाखेड़ा चौकी प्रभारी वशंज श्रीवास्तव को आवश्यक निर्देश प्राप्त हुए थे। आये दिन वेकोलि खदानों में रात्रि के समय अज्ञात चोरों व्दारा केबल (तार) चोरी कर ले जाने वाले चोरों की तलाश पतारसी करने के निर्देश दिए गए थे। पूर्व में 08 जुलाई 2024 की रात्रि में करीब 12.30 बजे तवा-01 खदान से अज्ञात चोरों व्दारा केबल (तार) चोरी कर ले जाए गए थे। इस पर थाना सारणी में अपराध क्रमांक 343/24 धारा 331(4), 305(ई) बीएनएस का कायम कर विवेचना में लिया जाकर आरोपियों की तलाश पतारसी की गई।

विवेचना के दौरान सायबर सेल बैतूल से प्राप्त डाटा से घटना दिनाँक और समय पर तवा-01 खदान में पदस्थ सुरक्षा प्रहरी सुरेन्द्र पिता दशन सिरसाम उम्र 25 साल निवासी ड्रिलिंग कैम्प पाथाखेड़ा की अपराध के आरोपी से सांठ-गांठ पाई गई। आज सुरक्षा प्रहरी सुरेन्द्र पिता दशन सिरसाम को चौकी पाथाखेड़ा पूछताछ हेतु बुलाया गया। सुरक्षा प्रहरी से घटना दिनाँक को पूर्व में गिरफ्तार आरोपी विशाल उर्फ डायमंड से घटना दिनाँक के समय हुई बातचीत के बारे में पूछताछ की गई। सुरक्षा प्रहरी सुरेन्द्र द्वारा बताया गया कि मेरे द्वारा तवा-01 खदान में रखे केबल (तार) की जानकारी विशाल उर्फ डायमंड को बताई जाती थी।

स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान एसआई ने पत्रकार को दी गोली मारने की धमकी

पत्रकारों ने एसपी से मुलाकात कर जताई नाराजगी, एसपी ने किया लाइन अटैच

बैतूल। पुलिस ग्राउंड में स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान एक पत्रकार को धमकाने वाले एसआई को एसपी निश्चल झारिया द्वारा लाइन अटैच कर दिया गया है। आज पत्रकारों ने इस पर नाराजगी जाहिर करते हुए एसपी से मुलाकात की थी। पुलिस ग्राउंड बैतूल में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में पत्रकार सेक्टर में प्रवेश के दौरान सब इंस्पेक्टर बीपी सिंह बुंदेला ने अधिमान्य पत्रकार ज्ञानदेव लोखंडे को पत्रकार सेक्टर में जाने से रोक दिया था। उन्होंने आरोप लगाया है कि इस दौरान पत्रकार को गोली से मारने की धमकी भी दी गई थी। इस मामले में शुक्रवार को सभी पत्रकारों ने पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया से मुलाकात की और करवाई की मांग की। एसपी ने मामले को गंभीरता से लेते हुए सब इंस्पेक्टर बुंदेला को लाइन हाजिर कर दिया है। एसपी ने भी माना है कि इस मामले में सब इंस्पेक्टर की

गलती है।

इस दौरान पत्रकारों की एसपी निश्चल झारिया से आगे होने वाले कार्यक्रमों और मुख्यमंत्री सहित अन्य वीआईपी कार्यक्रमों में मीडिया कर्मियों को कोई परेशानी न हो, इस पर भी विस्तार से चर्चा हुई। एसपी ने पत्रकारों को आश्वासन दिया है कि भविष्य के कार्यक्रमों में पत्रकारों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। एसपी ने इस मामले की जांच का भी आदेश दिया और आश्वासन दिया कि पत्रकारों के साथ इस तरह के दुर्व्यवहार को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

मरामझिरी पंचायत द्वारा बनाई जा रही रोड चढ़ी भ्रष्टाचार की भेंट

बैतूल। मरामझिरी पंचायत द्वारा चक्कर रोड पेट्रोल पंप के सामने से लालिया पहाड़ी की ओर बनाई जा रही रोड में सामने आया खुलकर भ्रष्टाचार सरपंच सचिव तथा इंजीनियर लगा रहे हैं जमकर पलीता। शासकीय मापदंड के अनुसार नहीं बनाई जा रही है रोड जमकर हो रहा है भ्रष्टाचार। सचिव बात करने पर कहा जा रहा है जो बनता है वह कर लो मनरेगा के तहत मजदूरों से नहीं कराया जा रहा है कार्य जेसीबी से किया जा रहा है कार्य।खबर मध्य प्रदेश के जिला बैतूल से बैतूल जिले की अधिकांश पंचायत में सरपंच सचिव सहित जिम्मेदारों द्वारा कराई जा रहे विकास कार्यों में किस तरह जमकर भ्रष्टाचार किया जाता है वह किसी से छुपा हुआ नहीं है ऐसा ही एक मामला ग्राम पंचायत मरामझिरी का सामने आया है जहां पर निर्माण एजेंसी पंचायत मर्म जी द्वारा चक्कर रोड स्थित पेट्रोल पंप के पास से ललिया पहाड़ी की ओर एक सीमेंट रोड का

निर्माण कराया जा रहा है जिसमें मनरेगा के तहत मजदूरों से काम नहीं करते हुए जेसीबी का उपयोग किया जा रहा है वही निर्धारित शासकीय मापदंडों को ताक में रखते हुए सरपंच सचिव तथा इंजीनियर द्वारा तानाशाही रवैया अपनाते हुए घटिया स्तर के मटेरियल का इस्तेमाल करते हुए शासन को जमकर चूना लगा या जा रहा है। जब पत्रकारों द्वारा धरातल पर जाकर देखा तो वहां पाया गया कि रोड बनाने के लिए मिट्टी युक्त नदी नालों की रेत का उपयोग किया जा रहा है दूसरी ओर माप दंड के अनुसार 4 इंच गिट्टी रेत तथा सीमेंट रोड का जो बेस डाला जाता है वह मात्र 2 इंच का है तथा इसमें भी नाम मात्र के सीमेंट का उपयोग किया जा रहा है इस बेस के ऊपर 8 इंच का जो पक्का बेस डाला जाता है वह मात्र 5 से 6 इंच का डाला जा रहा है। जब इस संबंध में सचिव मुरली यादव को जानकारी लेने हेतु फोन लगाया गया तो उसके द्वारा बताया गया कि इंजीनियर ने जैसे बताया है वैसा कार्य किया जा रहा है तब पत्रकार द्वारा सचिन से इंजीनियर का नंबर मांगा गया तो उसके द्वारा कहा गया कि मेरे पास इंजीनियर का नंबर नहीं है तुमसे जो बनता है कर लो। पंचायत द्वारा कार्य में की जा रही अनियमितता की शिकायत पत्रकारों द्वारा कलेक्टर से करते हुए पत्रकार का एक दल जिला पंचायत सीईओ से मिले तथा उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया।

26 मई की घटना को लेकर सीताशरण उच्च न्यायालय जायेंगे...

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

गैर इरादतन हत्या का प्रकरण दर्ज करवाने आम आदमी पार्टी आरटीआई विंग जिलाध्यक्ष सीताशरण पाण्डेय अब उच्च न्यायालय की शरण लेंगे..

नारायण नगर इटारसी रोड़ पर फारेस्ट रेस्टहाउस पुलिया के पास 26 मई की शाम 4 से 5 के बीच पांडुखेड़ी जिला बैतूल निवासी दीपा उर्फ आरती उइके की मौत नगरपालिका द्वारा बरती गई लापरवाही के कारण बस से कुचला जाने से घटना स्थल पर हो गई थी। मामले की जानकारी लगते ही जिसमें नगरपालिका के अमले ने साक्ष्य मिटाने पोकलेन मशीन का इस्तेमाल कर घटना स्थल से मौत का कारण बने नाले का कचरा/ मलवा हटाने का काम किया था जो अपराध की श्रेणी में आता है बताते हुए आम आदमी पार्टी आरटीआई विंग जिलाध्यक्ष सीताशरण पाण्डेय ने आयुक्त नगरीय प्रशासन, जिला कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक सहित कोतवाली को शिकायत करते हुए संपूर्ण रुप से मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले की अकुशल प्रशासनिक छवि को व्यक्तिगत रूप से जवाबदार बताकर गैर इरादतन हत्या का प्रकरण दर्ज प्रकरण न्यायादिष्ट करने हेतु दिया था। लेकिन किसी भी जिम्मेदार अधिकारी ने इस

मामले में ध्यान नहीं दिया। मुख्य नगरपालिका अधिकारी ने घटना को एक दुर्घटना बताते हुए स्वास्थ्य शाखा के अधिकारी कर्मचारियों के बयान लेकर पूरी घटना असत्य और भ्रामक बताते हुए एक तरह से आम आदमी पार्टी आरटीआई विंग जिलाध्यक्ष सहित अखबार की खिल्ली उड़ाई थी। उस मसले में अब सूचना के अधिकार के तहत ली गई जानकारी में वाहन लाक बुक में उस दिन पोकलेन मशीन के उपयोग किए जाने का हवाले से स्पष्ट होता है कि मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले से इस शिकायत के संदर्भ में परियोजना अधिकारी को मामले में गलत जानकारी देकर बचने का रास्ता अपनाया। मुख्य नगरपालिका अधिकारी से अपने स्पष्टीकरण में 6 जून को पत्र क्रमांक/1016/ नपा./2024 में स्पष्ट रूप से लिखा कि नगरपालिका परिषद द्वारा वर्षा पूर्व नाले/नालियों की सफाई का कार्य अनिवार्य कर्तव्य के अन्तर्गत शासन के दिशा निर्देशों के अनुसार किया जाता है। उक्त घटना वास्तव में एक दुर्घटना है जिसमें इरादतन/ गैर इरादतन हत्या जैसी कोई बात नहीं। नाले/ नालियों से निकलने वाला मलवा सूखने के उपरांत तत्काल हटवा दिया गया था। स्वास्थ्य शाखा में संलग्न अधिकारी/ कर्मचारियों के लिखित कथन की प्रति उत्तर में संलग्न की गई साथ ही दिनांक 27/5/24 को विषयानुसार प्रकाशित अखबारी सूचना के तथ्य पूर्णतः असत्य एवं भ्रामक बताया था। लेकिन वाहन लाक बुक के अनुसार मशीन नं 2 फायर से लाए, रसूलिया वार्ड नंबर 22 में कचरा ट्रक व ट्राली में लोड किया। वहां से महेंद्रा शोरूम रसूलिया गये। वहां नाले का काम किया। शाम को मशीन फायर लाए । फायर से मशीन नारायण नगर पुलिया लेकर गये। वहां रास्ते से कीचड़ तथा मिट्टी हटाया। रात में मशीन फायर लाए। वाहन लाक बुक में इंद्राज गाड़ी की जानकारी से समझ आता है कि साक्ष्य मिटाने का काम किया गया है। पूरे मामले को लेकर अब आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष आरटीआई विंग उच्च न्यायालय जाने की बात कह रहे हैं। यदि वे उच्च न्यायालय के जरिए इस मामले में मुख्य नगरपालिका अधिकारी के विरुद्ध गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज करवा सके तो निश्चित है गलत काम करने वाले जिले के सभी अधिकारियों के लिए सबक साबित होगा।

मुफ़ासा : द लायन किंग

राजा का परिवार फिर जंगल पर राज करेगा

शाहरुख़ खान, आर्यन खान और अबराम खान पहली बार फिर साथ आए। वे डिज्नी की बहुप्रतीक्षित पारिवारिक मनोरंजन फिल्म 'मुफ़ासा : द लायन किंग' के हिंदी संस्करण में अपनी आवाज दे रहे हैं। निर्देशक बैरी जेनकिंस की यह फिल्म 20 दिसंबर को अंग्रेजी, हिंदी, तमिल और तेलुगु में रिलीज हो रही है।

अब समय आ गया है जंगल के असली राजा मुफ़ासा : द लायन किंग की विरासत को जानने का, जिसे अब तक की सबसे बड़ी कास्टिंग के साथ हिंदी में पेश किया जा रहा है। इसमें कोई और नहीं बल्कि शाहरुख खान और उनके बेटे आर्यन खान और अबराम हैं। 2019 की ब्लॉक बस्टर लाइव-एक्शन द लॉयन किंग की सफलता के बाद, शाहरुख़ खान मुफ़ासा के रूप में वापस आ रहे हैं। दर्शकों को जंगल के असली राजा की उत्पत्ति में ले जाने के लिए। उनके साथ हैं उनके बच्चे, आर्यन के रूप में सिम्बा और अबराम के रूप में छोटे मुफ़ासा। इस साल की सबसे प्रतीक्षित रिलीज़, भव्य लाइव-एक्शन 'मुफ़ासाः द लायन किंग' का हिंदी ट्रेलर जारी कर दिया गया। इस साल की सबसे प्रतीक्षित रिलीज़ के दृश्यात्मक रूप से शानदार लाइव-एक्शन मुफ़ासाः द लायन किंग, का हिंदी ट्रेलर जारी हो गया है, जिसे भारतीय सिनेमा के किंग खान और उनके बच्चों की प्रभावशाली उपस्थिति से समृद्ध किया गया है।

इस बारे में बात करते हुए शाहरुख़ खान कहते हैं कि मुफ़ासा की अद्वितीय विरासत है और वह जंगल के असली राजा के रूप में स्थापित हैं, जो अपने बेटे सिम्बा को अपनी समझ प्रदान करता है। एक पिता के रूप में उनसे गहराई से जुड़ता हूँ और फिल्म में मुफ़ासा की यात्रा से भी मेरा गहरा संबंध है। 'मुफ़ासा : द लायन किंग' मुफ़ासा के बचपन से लेकर एक अद्भुत राजा बनने तक के जीवन को चित्रित करता है। इस किरदार को फिर से निभाना असाधारण रहा है। यह मेरे लिए डिज्नी के साथ एक विशेष सहयोग है। खासकर इसलिए कि मेरे बेटे आर्यन और अबराम इस

यात्रा का हिस्सा हैं और उनके साथ यह अनुभव साझा करना वास्तव में बहुत मायने रखता है।

डिज्नी स्टार के स्टूडियो हेड बिक्रम दुग्गल ने

कहा कि उग्र मुफ़ासा सिर्फ एक काल्पनिक चरित्र नहीं है, वह एक ऐसी भावना का प्रतीक है जो पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती है और यही गुण हर कहानी में डिज़्नी लाने की कोशिश करता है। जब मुफ़ासाः द लायन किंग की घोषणा की गई थी, तो दर्शक शाहरुख़ खान और आर्यन खान के अलावा किसी और को मुफ़ासा और सिम्बा के रूप में हमारी पारिवारिक मनोरंजन फिल्म में वापस नहीं देख सकते थे। अब, अबराम के कास्ट में शामिल होने के साथ, यह फिल्म हमारे लिए और भी खास बन गई। प्रयास है कि लाखों भारतीय दर्शक इस अद्भुत कहानी को अपने परिवारों के साथ आनंद लें!

नए और प्रशंसकों के पसंदीदा पात्रों को जीवंत करते हुए और लाइव-एक्शन फिल्म निर्माण तकनीकों को फोटोरियल कंप्यूटर-जनरेटेड इमेजरी के साथ मिलाते हुए 'मुफ़ासाः द लायन किंग' का निर्देशन बैरी जेनकिंस द्वारा किया गया। फिल्म के बारे में 'मुफासाः द लायन किंग' में राफ़िकी को प्राइड लैंड्स के प्रिय राजा के अप्रत्याशित उदय की कहानी सुनाने के लिए शामिल किया गया है। यह फिल्म एक अनाथ शावक मुफ़ासा को प्रस्तुत करती है। ताका नामक एक शेर जो एक शाही वंश का उत्तराधिकारी है और उनके साथ असाधारण समूह उनकी विस्तृत यात्रा का परिचय कराती है। मुफासाः द लायन किंग' 20 दिसंबर को चार भाषाओं अंग्रेजी, हिंदी, तमिल और तेलुगु में भारतीय सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

नहीं थमेगा अजय की एक्शन का सिलसिला

एक्शन स्टार अजय देवगन की साल 2024 में अब तक दो फिल्में रिलीज हुई। उनकी कई फ़िल्में पाइप लाइन में हैं। इस साल अजय देवगन की तीन फिल्में रिलीज होने वाली है। इस बीच खबर मिली कि अजय देवगन के हाथ एक और फिल्म लग गई है। बताया जा रहा है कि अजय देवगन अपनी इस फिल्म में एकदम नए अवतार में नजर आएंगे। एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री के स्टार अजय देवगन की फिल्म 'सन ऑफ सरदार-2' और फिल्म 'दे दे प्यार दे-2' की शूटिंग चल रही है। इस बीच बताया जा रहा है कि अजय देवगन की के हाथ एक एक्शन फिल्म आई है।

अजय देवगन और फिल्ममेकर लव रंजन ने फिल्म 'दे दे प्यार दे' में साथ में काम किया था। इस फिल्म के सीक्वल 'दे दे प्यार दे-2' पर दोनों काम कर ही रहे हैं। अब अजय देवगन और लव रंजन एक और फिल्म को लेकर साथ में काम करने वाले हैं। डायरेक्टर जगन शक्ति के साथ अजय देवगन फिल्म करेंगे। इस फिल्म को लव रंजन प्रोड्यूस करने वाले हैं। इस बड़े बजट की फिल्म में अजय देवगन बिल्कुल नए

अवतार में नजर आएंगे। इस फिल्म को दिसंबर तक स्टार्ट करने और अगले साल रिलीज करने की प्लानिंग है। बताया जा रहा जगन शक्ति फिल्म की स्क्रिप्ट लेकर लव रंजन के पास गए, तो उन्होंने हां कर दी।

डायरेक्टर से प्रोड्यूसर बने लव रंजन अपने बैनर को बढ़ाने को लेकर काफी उत्सुक हैं और उनके लिए अजय देवगन के साथ एक्शन फिल्म करना काफी अच्छा है। अजय देवगन की इस साल 'मैदान' और 'शैतान' जैसी फिल्में रिलीज हो चुकी हैं। 'शैतान' बॉक्स ऑफिस पर हिट रही तो 'मैदान' फ्लॉप हो गई। अब साल 2024 में अजय देवगन की फिल्म 'औरों में कहां दम था' अगस्त में, 'सिंघम अगेन' दिवाली पर और 'रेड-2' 15 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

रियल बॉक्स

वे ख़ास फ़िल्में जिनका कथानक दोहराया नहीं गया

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फिल्मों का इतिहास सौ साल से ज्यादा पुराना है। हर साल सैकड़ों फ़िल्में बनती है। कुछ दर्शकों को पसंद आती है, कुछ नहीं आती। लेकिन, कुछ ऐसी भी फ़िल्में बनती हैं, जो इतिहास बन जाती हैं। क्योंकि, उनके जैसी फ़िल्में फिर कभी नहीं बनती। मील का पत्थर बनी यही फ़िल्में पीढ़ी दर पीढ़ी दर्शकों को याद रहती है। इसलिए कि इन फिल्मों के कथानक, कलाकारों की अदाकारी और इनका गीत-संगीत सबसे अनोखा होता है। मुगले आजम, प्यासा, पाकीजा, अंकुश, वीर-जारा, हाथी मेरे साथी, जय संतोषी मां, एक दूजे के लिए और 'उत्सव' जैसी कई फ़िल्में हैं जो अपने समय काल में बेहद पसंद की गई। इन फिल्मों में कुछ ऐसा ख़ास था, जो किसी और फिल्म में दर्शकों को देखने को नहीं मिला। दर्शकों को पसंद आने वाली ऐसी फिल्मों में संख्या सैकड़ों में होंगी। फिर भी फिल्म इतिहास के पन्नों पर कुछ फ़िल्में ही अमिट है।

1957 में गुरुदत्त निर्देशित, निर्मित और अभिनीत 'प्यासा' ऐसी ही फिल्म है। यह संघर्षरत कवि विजय की कहानी है, जो स्वतंत्र भारत में अपनी कविताओं को प्रकाशित करना चाहता है। फिल्म का संगीत एसडी बर्मन ने दिया था। 'प्यासा' को देश तथा विश्व की सर्वकालिक श्रेष्ठ फिल्मों में गिना जाता है। समाज के छल-कपट से आक्रोशित नायक का मौलिक अस्तित्व को अस्वीकार करने की हताशा को गुरुदत्त ने बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया था। विश्व प्रसिद्ध पत्रिका 'टाइम' की वेबसाइट ने 10 सर्वश्रेष्ठ रोमांटिक फिल्मों में 'प्यासा' को शीर्ष पांच फिल्मों में स्थान दिया है। इसी तरह विजय आनंद ने 1965 में फिल्म 'गाइड' बनाई थी। यह फिल्म देव आनंद और वहीदा रहमान की सर्वश्रेष्ठ परफॉर्मेंस में से एक थी। यह फिल्म लेखक आरके नारायण के अंग्रेजी उपन्यास 'द गाइड' का रूपांतरण थी। यह देव आनंद की पहली कलर फिल्म थी और इसे अंग्रेजी में बनाया गया था। जब ये फिल्म बनाई गई, उस दौर में महिलाओं को आजादी नहीं थी। ये भी अपने कथानक के कारण आज भी याद है।

आजादी के बाद किसानों की समस्याओं से जुड़ी कई फिल्में बनीं। लेकिन, 1953 में आई बिमल रॉय की 'दो बीघा जमीन' ने देश के संक्रमणकालीन द्वंद्वों को उजागर किया। इस फिल्म ने आजादी के बाद बदलते राजनीतिक-आर्थिक दौर को सामने रखा है और स्पष्ट किया कि भविष्य में औद्योगिकीकरण कृषि भारत से कैसी कीमत वसूलेगा! किसानों का अपनी जमीन से बेदखल होना पड़ेगा, गाँवों खाली हो जाएंगे, भूमिहीन किसानों को विस्थापन की पीड़ा भोगना पड़ेगी और भू-मालिक मजदूर बनने को मजबूर हो जाएगा। यह आज सच भी है। महबूब खान ने 'औरत' (1940) और उसके बाद 'मदर इंडिया' (1957) बनाकर फिल्मों के जरिए कृषि और समाज की महाजनी अर्थव्यवस्था और उससे जुड़े अंतर्विरोधों को दर्शकों के सामने रखा। इस सच से भी समाज का सरोकार करवाया कि कृषि समाज में औरत की हैसियत क्या है? महबूब खान ने भारतीय स्त्री के यथार्थ को परदे पर दिखाकर समाज को घुटनों पर झुकने पर मजबूर भी कर दिया था।

समाज के अंतर्विरोधों को ख्वाजा अहमद अब्बास ने भी 'शहर और सपना' (1963) में सबके सामने रखा था। शहर की संस्कृति कितनी संवेदनाशून्य होती है और कैसे नारकीय जीवन को जन्म देती है। इस थीम को बाद में शहरीकरण की विद्रूपताओं के साथ श्री 420, बूट पॉलिश, जागते रहो और 'फिर सुबह होगी' में भी दिखाया गया। दर्द भरी फिल्मों में राजेश खन्ना और अमिताभ बच्चन की फिल्म 'आनंद' थी, जिसे रिलीज हुए 50 साल हो गए। लेकिन, आज भी लोगों के दिलो-दिमाग से इस फिल्म का खुमार नहीं उतरा है। ऋषिकेश मुखर्जी की इस फिल्म को 1971 में रिलीज किया गया था। फिल्म में

राजेश खन्ना ने आनंद सहगल का किरदार निभाया, जो कैंसर से पीड़ित एक खुशमिजाज व्यक्ति है। अमिताभ बच्चन ने उनके दोस्त डॉ. भास्कर बनर्जी का रोल किया था। इस फिल्म से अमिताभ बच्चन को संजीदा अभिनेता के रूप में पहचान मिलना शुरू हुई।

फिल्मों में प्रेम एक सर्वकालिक विषय रहा है। 1975 में आई प्रेम पटकथा पर बनी फिल्म 'जूली' को अपने समयकाल में बहुत ज्यादा पसंद करने के साथ आलोचना भी झेलना पड़ी थी। केएस सेतुमाधवन की निर्देशित और चक्रपाणि द्वारा लिखी कहानी पर बनाई इस फिल्म में लक्ष्मी ने शीर्षक भूमिका निभाई थी। इसमें विक्रम, नादिरा, रीटा भादुड़ी, ओम प्रकाश, उत्पल दत्त और श्रीदेवी (उनकी पहली महत्वपूर्ण हिंदी फिल्म) भी हैं। इसका संगीत भी ब्लॉकबस्टर रहा था। प्रेम कथाओं के इस दौर में 1993 में यश चोपड़ा की फिल्म 'डर' आई। यह संभवतः फिल्म इतिहास की पहली ऐसी फिल्म थी, जिसके दर्शकों ने नायक से ज्यादा खलनायक को पसंद किया। दर्शकों की आंखे खलनायक की मौत पर नम भी हुई। यह फिल्म 30 साल बाद भी ट्रायंगल लव स्टोरी के रूप में दर्शकों को याद है। इसमें शाहरुख़ खान के साथ जूही चावला और सनी देओल की मुख्य भूमिका थी। 'डर' के बाद सनी ने न तो यशराज के साथ कोई फिल्म की और न शाहरुख़ के साथ।

इससे पहले 1973 में आई 'बॉबी' भी ऐसी ही फिल्म थी, जिसने प्रेम के बंधन की गांठों को खोल दिया था। राज कपूर की जिन फिल्मों को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा उनमें 'बॉबी' भी है। ये ऐसी टीनएज प्रेम कहानी है, जो अलग-अलग वर्ग से थे। वास्तव में तो ये युवाओं के लिए हवा के झोंके की तरह की फिल्म थी। अलग तरह के प्रेम की 1981 में आई अमिताभ बच्चन, रेखा और जया बच्चन की फिल्म 'सिलसिला' ऐसी फिल्म थी, जिसे अमिताभ-रेखा की जिंदगी से जोड़कर देखा जाता रहा। उस दौर में विवाहेत्तर रिश्तों जैसे विषय के कारण इस फिल्म की कहानी को आधुनिक भी समझा गया। फिल्म तो हिट नहीं हुई, पर फिल्म के गीत-संगीत को पसंद किया गया। कुछ फ़िल्में अप्रत्याशित रूप से सफल होती है। उनसे जितनी उम्मीद नहीं होती वे उससे ज्यादा छलांग मार देती है। ऐसी फिल्मों में निर्देशक अनिल शर्मा की फिल्म 'ग़दर' और इसके सीक्वल 'ग़दर-2' को रखा जा सकता है, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर अपनी सफलता के झंडे गाड़ दिए। दोनों फिल्मों में अपने एक्शन और आक्रोश से सनी देओल दर्शकों के दिलों पर छा गए थे। पहले भाग के 22 साल बाद 'ग़दर 2' आई। दोनों फिल्मों में निशाने पर पाकिस्तान रहा।

यश चोपड़ा की की 1975 में आई फिल्म 'दीवार' को अमिताभ बच्चन की कालजयी फिल्मों में गिना जाता है। 'दीवार' फिल्म का नायक उस दौर के सारे नायकीय गुणों से परे था। जबकि, फिल्म में नायक के नास्तिक होने के बावजूद उसका कुली के बिल्ला नंबर 786 के प्रति उसकी आस्था रहती है। फिल्म के अंत में जब छोटा भाई उसे गोली मारता है, तो यही बिल्ला उसके हाथ से छिटक जाता है। फिल्म का बेहद सशक्त सीन था अमिताभ बच्चन की बाँह पर 'मेरा बाप चोर है' लिखना। फिल्म के क्लाइमेक्स में निरूपा रॉय की छवि 'मदर इंडिया' की नरगिस जैसी माँ की भूमिका से मिलती-जुलती है! हिंदी फिल्म इतिहास में जिन फिल्मों को रिकॉर्ड तरह माना जाता था, उनमें 1975 में आई 'शोले' का नाम सबसे आगे है। ये एक एक्शन फिल्म है। सलीम-जावेद की लिखी इस फिल्म का निर्माण जीपी सिप्पी ने और निर्देशन रमेश सिप्पी ने किया है। इस फिल्म की कहानी जय और वीरू नाम के दो बदमाशों पर केंद्रित है, जिन्हें डाकू गब्बर सिंह से बदला लेने के लिए पूर्व पुलिस अधिकारी ठाकुर बलदेव सिंह अपने गाँव लाता है। जया भादुरी और हेमा मालिनी ने भी फिल्म में मुख्य भूमिका निभाई। शोले को भारतीय सिनेमा की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में से एक माना जाता है।

इससे पहले 1973 में आई फिल्म जंजीर' ने अमिताभ बच्चन को एक्टर के रूप में स्थापित किया। इस फिल्म ने ऐसा गुस्सैल नायक दिया, जिसका जलवा आज आधी शताब्दी बाद भी बरक़रार है। इस फिल्म की रिलीज को 50 साल हो गए। वे लोकप्रियता के उस शिखर पर हैं, जहां से वे 'जंजीर' की कामयाबी के बाद खड़े हुए थे। किसी एक्टर को कोई एक फिल्म इतनी ऊंचाई दे सकती है, 'जंजीर' इसका सबसे बेहतरीन उदाहरण है। जिन फिल्मों का उल्लेख किया गया सिर्फ वे ही फ़िल्में हिंदी फिल्म इतिहास का हिस्सा नहीं है। ऐसी और भी कई फ़िल्में हैं जो अलग-अलग समयकाल में दर्शकों की पसंद पर खरी उतरी हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सिनेमा में भी खूब चली भाई-भाई की जोड़ी

अशोक जोशी

राखी हो या भाई दूज भाई तो हमेशा की तरह इन पर्वों को मनाते रहते हैं और बहने सज संवरकर इन त्योहारों की खास तैयारी करती हैं।

वैसे हमारे समाज की परम्परा रही है कि हम बहन, बेटियों को खास तरजीह देते हैं। लेकिन, इस तरह भाईयों को अनदेखा करना भी उचित नहीं है। इस बार रक्षाबंधन पर भाइयों पर आधारित फिल्मों और फिल्मी भाईयों की बात कर ली जाए तो क्या हर्ज है।

सिनेमा में ज्यादातर फिल्में बहनों पर आधारित बनी है। छोटी बहन, बडी बहन, मझली दीदी जैसी फिल्में बनी तो भाईयों पर आधारित फिल्में भी कम नहीं हैं। यदि इस तरह की फिल्मों के शीर्षकों पर नजर दौड़ाई जाए तो भाई शीर्षक से जुड़ी फिल्मों की संख्या बहन से ज्यादा निकलेगी। यकीन न आता हो तो गिनकर देख लीजिए। भाई, दो भाई, भाई-भाई, बड़ा भाई, चल मेरे भाई, मुन्नाभाई एमबीबीएस, लगे रहो मुन्नाभाई ,मेरे भैया, बिग ब्रदर, हैलो ब्रदर ,गुरु भाई, भाई हो तो ऐसा, मैं और मेरा भाई और इसके अलावा भी कई फ़िल्में हैं। फिल्मी गीतों में भी भाईयों ने बहनो की तरह ही अपना जलवा बिखेरा है। इन गीतों में चल मेरे भाई तेरे हाथ जोड़ता हूं। देखो रे हुआ भाई भाई से जुदा, भैया मेरे राखी के बंधन , मेरे भैया मेरे चंदा, चंदा रे भैया से कहना और राखी का मतलब प्यार है भैया प्रमुख हैं।

हमारे यहां यदि रागिनी और पद्मिनी से लेकर करीना और करिश्मा जैसी बहनों ने नाम कमाया है तो भाईयों ने भी अभिनय के क्षेत्र में अपना दमखम दिखाया है। इनमें कुछ भाई सफल तो कुछ असफल रहे हैं। सफल भाइयों में अशोक कुमार और किशोर कुमार हैं तो इनके तीसरे भाई अनुप कुमार ज्यादा चल नहीं पाए। भाईयों में कपूर ब्रदर्स ने बहुत ज्यादा नाम कमाया है। चाहे वे राज कपूर, शम्मी कपूर

और शशि कपूर हो या ऋषि कपूर और रणधीर कपूर। जरूरी नहीं कि कपूर भाई का होना सफलता की गारंटी ही है। यदि ऐसा होता तो राज कपूर के तीसरे बेटे राजीव कपूर और अनिल कपूर के छोटे भाई संजय कपूर भी सफलता के झंडे गाड़ते, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

कई बार ऐसा भी हुआ है एक भाई के सफल होने पर दूसरा भाई उसी तरह की सफलता की आस लगाए सिने मैदान में कूद पड़ता है। लेकिन, उसे असफलता ही हाथ लगती है। दिलीप कुमार की सफलता से प्रेरित होकर हीरो बने उनके भाई नासिर खान ज्यादा नहीं चल पाए। देव आनंद के भाई विजय आनंद और चेतन आनंद ने कुछ फिल्मों में अभिनय पर हाथ आजमाए, लेकिन वे बेहतरीन निर्देशक जरूर बने लेकिन दूसरे देव आनंद नहीं बन पाए। सुनील दत्त चाहकर भी अपने भाई सोमदत्त को सफलता का दीदार नहीं करवा पाए। मनोज कुमार अपने भाई राजीव गोस्वामी को अभिनेता बनाने के चक्कर में पारिवारिक कलह में ऐसे फंसे कि उबर नहीं पाए। प्रेमनाथ के साथ उनके भाई राजेन्द्र नाथ तो सफल रहे, लेकिन नरेन्द्र नाथ ज्यादा नहीं चल सके। आमिर खान के भाई फैजल खान, फिरोज खान के भाई संजय खान और अकबर खान और सलमान खान के भाई अरबाज खान और सोहेल खान की कहानी भी कुछ ऐसी ही है।

अभिनय के अलावा दूसरे क्षेत्रों में भी भाईयों ने अपनी किस्मत आजमायी है। गायन में जिस तरह मंगेशकर बहनों का एक छत्र राज्य चलता आया। भाइयों में ऐसी जोड़ी नहीं दिखाई दी। कव्वाली के मैदान में जरूर कुछ भाईयों ने नाम कमाया। संगीत के क्षेत्र में कल्याणजी-आनंदजी के बाद जतिन-ललित

और आनंद-मिलिंद ने अच्छा नाम कमाया। लेकिन, कोई भी कल्याणजी-आनंदजी की तरह लम्बे समय तक नहीं टिक पाए।

निर्देशन के क्षेत्र में आनंद बंधुओं की सफलता का ग्राफ सबसे ज्यादा ऊंचा रहा। चेतन आनंद गंभीर निर्देशन के क्षेत्र में अग्रणी रहे, तो विजय आनंद ने मनोरंजक फिल्मों में खूब नाम कमाया। उनकी तरह देव आनंद भी निर्देशक बने लेकिन 'हरे राम हरे कृष्ण' और 'देस परदेस' को छोड़कर तीसरी सफल फिल्म का निर्देशन नहीं कर पाए। संयोग से यह दोनों सफल फिल्में भाई-बहन और भाई-भाई के प्रेम पर आधारित थी। वैसे तो राज कपूर के साथ शम्मी कपूर और शशि कपूर ने, रणधीर कपूर के साथ ऋषि और राजीव कपूर, फिरोज खान के साथ संजय खान और अकबर खान ने निर्देशन की परम्परा को आगे बढ़ाया। लेकिन, इनमें भी एक भाई सफल तो दूसरे भाई असफल रहे। अब्बास-मस्तान भाईयों की जोड़ी जरूर निर्देशन के क्षेत्र में कुछ हद तक सफल रही।

हिंदी सिनेमा में राकेश रोशन और उनके छोटे भाई राजेश रोशन दोनों ने अपार सफलता पायी। लेकिन, दोनों के क्षेत्र अलग-अलग थे। कुछ कलाकारों ने भाई होने का दायित्व सगा भाई न होने के बाद निभाया है। इनमें लता मंगेशकर सबसे ज्यादा भाग्यशाली है जिन्हें मदन भैया, युसूफ भैया और मुकेश भैया का स्नेह मिला तो सलमान खान ऐसे अभिनेता है जिन्हें फिल्म इंडस्ट्री का 'भाई' कहकर पुकारा जाता है। इसीलिए तो सभी की यही कामना होती है कि भाई हो तो सिनेमाई।

फायदा है... तो फिर कैसा कायदा!

प्रकाश पुरोहित

राज्य परिवहन निगम क्या होता है...?' व्यंग्य लेखक हरिशंकर परसाई की किताब पढ़ते हुए बच्चे ने पूछा तो थोड़ी देर मुझे भी सोचना पड़ा कि यह नाम सुना तो है। रचना की कुछ लाइन पढ़ीं तो सब याद आ गया। जो तीस साल पहले पैदा हुए हैं, उनके लिए यह नाम अनजाना-सा है। आजादी के बाद से ही मध्यप्रदेश में राज्य परिवहन निगम की बस-सेवा ही पूरे राज्य और पड़ौसी राज्यों को एक-दूसरे से जोड़ती थी। यही समय था, जब ये बस ही यहां से वहां ले जाती थीं और इनका हर जगह इंतजार होता था। उन दिनों इंदौर से बांबे भी ये ही बस लाती-ले जाती थी। इधर कानपुर, आगरा और नागपुर तक चलती थी, अहमदाबाद, जयपुर और कहां नहीं! रेल तो हर जगह नहीं थी, तो ये सरकारी बस-सेवा ही जनता के काम आती थी। शुरू में इनका रंग लाल हुआ करता था, डाक विभाग की गाड़ियों जैसा। संविद शासन में इन बसों को 'राजमाता' कहने लगे थे। राजमाता आने वाली है, राजमाता से जाएंगे, राजमाता आज नहीं आई, जैसे वाक्य आम थे। तब राज्य सरकारों में अपनी बस सेवा को बेहतर बताने के विज्ञापन जारी होते थे और होड़ लगी रहती थी।

फिर कांग्रेस का राज्य आया तो इनका रंग हरा हो गया और इसी वजह से परसाईजी ने लिखा था 'ये सरकारी बस, बेहद प्रकृति-प्रेमी होती थी, जहां हरियाली देखती, बंद हो जाती हैं।' तब दूसरी आ रही बस में सवारी एडजस्ट की जाती थी या फिर नई बस आती थी, तब तक यात्री प्रकृति के सान्निध्य में चार पल गुजारते थे। तब इस बात की शिकायत भी कोई नहीं करता था कि बस खड़ी कैसे हो गई। यही कहा जाता था कि गाडी-घोड़े हैं, कब, कहां अड़ जाएं, कौन जानता है। तब आगे की दो सीट पर 'विधायक' लिखा रहता था, जिस पर नेताजी नजर आ ही जाते थे, क्योंकि उन दिनों बोलेरो का चलन नहीं था। विधायक को बस का पास मिलता था, टिकट नहीं लगता था। पूरी सीट, जो तीन सवारी की होती थी, अकेले विधायक के लिए आरक्षित रहती थी। जनता को विधायक के साथ सफर करने का मौका मिलता रहता था। तब यह विज्ञापन भी नहीं लगते थे कि **'लापता विधायक लाने वाले को इनाम।'** जनता जिसे चुनती थी, उसे साक्षात देख भी सकती थी, बस के अंदर!

लंबी दूरी की बस में ड्राइवर के ठीक बगल में लंबी सीट और होती थी, जिस पर एक्स्ट्रा ड्राइवर नींद निकाल रहा होता था। हर बस में दो ड्राइवर और एक कंडक्टर होता था। बस लेकर रवाना हुआ ड्राइवर शाम को सीट छोड़ देता और फिर दूसरा ड्राइवर मोर्चा संभाल लेता था और ये थका-हारा सो जाया करता था, जबकि पास में ही यह सूचना हर बस में लिखी होती थी कि **'ड्राइवर के पास वाली सीट पर झपकी लेना मना है।'** यात्री जागते रहते थे। सरकारी बस स्टैंड पर ही ये बस रुकती थी, किसी अप्पू-पप्पू के ढाबे पर नहीं। बस-स्टैंड भी चहल-पहल भरे होते थे कि रात में भी दिन का एहसास कराते थे। तब बस- स्टैंड घूमने जाना युवाओं का नियमित और प्रिय शगल होता

था, अच्छा टाइम-पास हो जाता था। तब चाय- पानी या नाश्ता ही मिलता था, ज्यादातर यात्री अपने साथ घर से रोटी बांध कर ही लाते थे, जो सेव से खा लिया करते थे। इन सरकारी बसों की जबर्दस्त धाक हुआ करती थी। लंबी दूरी की बस एकदम अलग, दूर से नजर आती थी और उसके ड्राइवर का 'एटीट्यूट' भी देखते ही बनता था, क्या तो आज के पायलट भी ऐसा करते होंगे। नियमित आने-जाने वाले ड्राइवर के बारे में ही बातें करते रहते थे कि **'शिवा भइया अपने ही गांव के तो हैं। पहाड़ पर भी दूसरा हाथ नहीं लगाते हैं। एक हाथ से ही चलाते हैं गाड़ी।'**

इन बसों में टिकट की चेकिंग छापामार स्टाइल में होती थी कि सरकारी जीप आड़ में खड़ी रहती थी और एकदम बस के सामने आ जाती थी। सभी के टिकट चेक होते थे और बे-टिकट की जिम्मेदारी कंडक्टर की होती थी। आटे में नमक तो फिर भी धका लिया जाता था, लेकिन ज्यादातर रात की सवारियां आधे दाम में बगैर टिकट यात्रा करती थीं। ये परस्पर सहयोग का बेहतरीन नमूना था। कंडक्टर पहले तो हेड से लेन-देन, मोल-भाव करता और जब सौदा नहीं पटता तो उसे फौरन वहीं सस्पेंड कर दिया जाता। एवजी कंडकटर हमेशा तैयार रहता था। सवारियों से पूरा किराया वसूल किया जाता और तब जाकर बस रवाना होती थी। वैसे उन दिनों बस का समय तय था, आने और जाने का। इमरजेंसी में तो लोग घड़ी मिला लिया करते थे इन बस के समय से!

फिर **'श्रीमान बंटाढार'** का युग आया मध्यप्रदेश में और देखते ही देखते राज्य परिवहन निगम में इतने घोटाले होने लगे कि सरकार मुसीबत में आ गई। नाम बदला, पहले सड़क परिवहन निगम हुआ और फिर एक दिन यह निगम ही बंद कर दिया गया। तब तक सभी दलों के नेताओं ने इतनी उन्नति कर ली थी कि अपने इलाके में अपनी या अपने वालों की बस डालने लगे थे। सरकारी बस देखते ही देखते मध्यप्रदेश से हवा हो गई, जबकि आसपास के राज्यों में आज भी धड़ल्ले से चल रही हैं। हमारे प्रदेश में प्रायवेट बस का जाल फैल गया। अब कोई टिकट चेकर नहीं आता, कोई बस नियम-कायदे से नहीं चलती, किसी भी बस में, कितनी भी सवारी खड़ी करने की छूट मिल गई। ढाबे और होटलों से अनुबंध होने लगा और बस-स्टैंड के बजाय इन ठिकानों पर बस रुकने लगी। जनता को शिकायत करने का मौका ही नहीं दिया जा रहा। जो है, यही है, जाना हो तो जाओ...!

ये बे-बस बातें अभी इसलिए याद आईं कि पिछले हफ्ते पेरिस में था। यहां बस, सरकार ही चलाती है, में एकदम चार टिकट चेकर आए और हर एक का टिकट चेक करने लगे। वहां कंडक्टर नहीं होता है। एक मशीन पर टिकट छुआना होता है और आवाज आते ही अंदर जाना होता है। ज्यादातर ऐसा ही करते हैं, फिर भी चेकिंग होती है और बे-टिकट यात्री से चार गुना पेनल्टी वसूल की जाती है, मौका-ए- वारदात पर। ये काम चार कर्मचारियों के जिम्मे है, इसलिए फौरन निपट जाता है और बस चल देती है। कहते हैं फ्रांस विकसित देश है और हालत देखिए कि अभी भी उस प्राचीन परंपरा को निभाए हैं, जो हमारी नई पीढ़ी को पता भी नहीं है।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने गलती से एक बार जिक्र किया है कि राज्य परिवहन निगम फिर से जिंदा करेंगे, लेकिन हकीकत तो उन्हें भी पता है कि उनके अपने भी ना जाने कितने हैं, जिनकी बसें पूरे प्रदेश में दौड़ रही हैं। बर्र के छत्ते में हाथ तो नहीं डालेंगे, फिर भले ही यह सत्यानाश कांग्रेस के दिग्गज दिग्विजयसिंह के राज में हुआ हो। फायदे में तो सारे कायदे फिजूल हो ही जाते हैं!

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

जब प्रेम लेखन के साथ सफ़हों पे बिखर गया

इन दिनों हम अमृता प्रीतम की बात कर रहे हैं। अमृता के बचपन और किशोरावस्था की कुछ बातें छूट गई थीं, जो बताना ज़रूरी है क्योंकि उन्ही घटनाओं की वजह से अमृता की लेखनी मुखर हो गई। अमृता के माता-पिता पंचखंड भसोड़ के स्कूल में पढ़ाते थे। नंद और हाको दो भाई बहन जिनके मां-बाप नहीं थे गेरूआ बाना पहन लिया। बहन का देहांत हुआ। नंद ने कई संस्कृत ब्रजभाषा सीखी। ''बालका'' साधु कहलाने लगा। राज बीबी गुजरात से थी। पति फौज में गये तो वापस नहीं आये। भाभी के साथ दयालजी के डेरे पे मत्था टेकने आती थी। नंद कविता सुनाकर राजबीबी को देखते। दयाल बाबा ने कहा तुम्हारी जोग की उम्र नहीं है। अमृता कहती है, इस तरह राजबीबी मेरी मां बनी और नंद साधु करतार सिंह नाम से मेरे पिता।

अमृता के पिता ने पहली ही अपनी संपति त्याग दी थी। एक मकान था, उसके गुरूभाई का मकान के कारण विवाह नहीं हो रहा था। वो मकान उन्होंने उसे दे दिया और सारी जिंदगी किराये के मकान में रहे। बंटवारे से पहले जिस पेटी में उन्होंने रूपया अथाह गहने एक संतनी के पास रखवाए थे वो मुकर गई। अब मां के जाने के जाने के बाद अमृता थी और राजन। पिता को भनक लगी तो उन्होंने रात में कीर्तन सोहिले का पाठ पढ़वाना शुरू किया। कहते है सोते समय आपके चारों ओर एक किला बन जाता है। सारी रात तुम सुरक्षा में रहते हो अमृता को चिंता हुई अब खूवाब में राजन कैसे आयेगा। सो अमृता पाठ से पहले ध्यान करके उसे अपने पास बुला लेती है फिर किले में बंद हो जाती। जीवन भर अमृता सूफी वाणी, संतों, दरवेश, भगवान, खूवाबों ज्योतिष और ध्यान के सहारे रही और उसी से उनका लेखन निकला। उनके पूर्वाभास बहुत सही थे।

मां की मृत्यु के कारण वो ईश्वर से नाराज़ रही। अमृता बताती हैं मेरी मां होती तो मेरा सोलहवां साल कुछ और तरीके से आता। ना दोस्त ना सहेलियां। पिताजी उसकी सुरक्षा को लेके बहुत चिंतित थे। सो अमृता का सोलहवां साल पिछले दरवाजे से दीवार फांद कर आता है। वो ये भी कहती है कि पूरे घर में धार्मिक किताबें थी। अब धार्मिक किताबों में अप्सरायें भी होती है। सोलहवें साल में वहीं ध्यान आकर्षित हुआ और उन्होंने कवितायें लिखी।

इसी बीच अमृता के जीवन में एक साया उतरा। वो एक कार्यक्रम में गई थी। पंद्रह लोग थे। दो दिन वहां रूकना पड़ा। तीसरे दिन सब चल पड़े। कोई पांच मील तक अमृता उसके साये के साथ चलती रही। उन्हें लगा वो साया उनके साथ पिछले जन्म से है। लाहौर पहुँचकर वो अलग हो गये पर उन्हें खबर हो जाती कि इस समागम में वो आने वाला है वो पहुँच जाती। उनके कहने के अनुसार ''जब कभी वो आता मेरी काली रातें भी सपनों के पैरों तले चांदनी बिछा देतीं। एक दिन वो उनकी दहलीज़ पर एक नज़्म लिख के लाया और कागज़ छोड़ गया उस दिन से उन्हें लगा वो जो भी नज़्म लिखती है उसके लिये है। थोड़े दिन बाद पता चला उसे शहर छोड़ के जाना है। उसने अमृता की कुछ नज़्में और तस्वीर मांगी, फिर अखबार और किताबें जैसे डाकिया हो गई। वो साहिर था अमृता का साहिर।

इसी बीच शहर में अमृता के नये आशिक का नाम कवि मोहन सिंह के रूप में फैला। अमृता की ख़ामोशी ने उसे और हवा दी। आखिर अमृता ने उनकी ग़लतफ़हमी दूर की। लाहौर रेडियो पर जहाँ अमृता काम करती थी वहाँ के एक अफ़सर को अमृता का साहित्य इतना पसंद आया कि वो कह बैठे ''कुछ बरस पहले आपको देखा होता तो या तो मैं मुसलमान से सिख हो गया होता या आप सिख से मुसलमान। फिर अचानक बंटवारे के बहाव में बहती अमृता देहरादून आई और दिल्ली में नौकरी ढूंढी।

आज आक्खां वारिस शाह नूं किंते कबरां बिच्चों बोल ते आज किताबें इश्क दा कोई अगला वरका खोल...। कुछ समय बाद यह कविता पाकिस्तान पहुँची। नदीम क़ासमी तब जेल में थे। उन्होंने वहाँ पढ़ी। जब वो जेल से निकले तो देखा लोग इस कविता को जेबों में रखते है पढ़ते है। आप देखिये देशों का बंटवारा हुआ पर साहित्यकार एकजुट थे। जब 1972 में लंदन

गई तो वहाँ शायरा क़ज़ल बाश से मुलाकात करवाई वो उनके गले लग गई, अरे ये तो अमृता है जिन्होंने वारिस शाह लिखी थी। जब पाकिस्तान के मुलतान से मशकूर साबरी उर्स के मौके पर दिल्ली आये तो उन्होंने बताया वह मुलतान में ''जश्ने वारिस शाह मनाते है जिसकी शुरूआत ''वारिस शाह अमृता की नज़्म से होती है।

आप को मानना पड़ेगा कि दिल से लिखी इश्क़ और दर्द की बातें लोगों के दिल को छूती हैं। आज हमारे संगीत, साहित्य लोककला के बीच नफरत की दीवार खड़ी कर दी गई हैं, लिख भी नहीं सकते खुल के। कब क्या बैन हो जाये। 1946 में जब उनका बेटा होने वाला था उन्होंने ध्यान किया कि मां जिसकी शक्ल की कल्पना करती है बच्चा वैसा होता है। मुहब्बत की इंतेहा देखिये उन्होंने साहिर का तसव्वुर किया।

तब साहिर ने हँस के कहा 'वेरी पुअर टेस्ट' दरअसल उन्हें काम्पेलक्स था वह सुंदर नहीं है। 1960 में अमृता बंबई गई तो राजेंद्र सिंह बेदी ने पूछा नवराज साहिर का बेटा है। उन्होंने कहा ये कल्पना का सच है, हकीकत का सच नहीं। एक दिन 'नवराज' ने भी पूछा, एक बात पूछूं, सच-सच बताओगी क्या मैं साहिर अंकल का बेटा हूँ। नहीं, तुम बता दोगी तो भी मुझे वो पसंद है। लाहौर में साहिर साहब अमृता से मिलने आते तो सिगरेट पर सिगरेट पीते। जब वो चले जाते अमृता उनके छूटे सिगरेटों को जलाकर पीती मानो जैसे उसका हाथ छू रही हो। यूँ उन्हें सिगरेट की आदत पड़ गई। इस बात का ज़िक्र उनके उपन्यास 'एक थी अनीता में' है। तब तक साहिर को भी ये बात पता नहीं थी।

'अक्षरों की अजमत' उनका पहला उपन्यास था। फिर एक-एक याद को लेकर बनते थे। पिता की दयालुता का फायदा उठाने वाले को देखकर अमृता ने आकाश से तारा टूटते देखा वह विश्वास का तारा था। अमृता ऐसे लिखतीं है कि पाठक को लगता है अरे ये तो मुझे सुना रही हैं। और मैं भी आपको ऐसे सुना रही हूँ जैसे उन्होंने मुझे पुस्तक में बताया।

साहिर को फोन लगाते अमृता के हाथ रूक गये वहां रखे 'ब्लिट्ज' में खबर थी, साहिर को नई मुहब्बत मिल गई। एक क्षण उन्होंने मरने की सोची। तब तक इमरोज़ से दोस्ती हुई। शुरूआती दोस्ती के बारे में अमृता से सुनते हैं। बाकी आखिरी दिनों के अमृता के इमरोज के सफर को उनकी दोस्त उमा त्रिलोक से जानेंगे। मैंने पहले भी बताया था कि अमृता के सारे उपन्यास उनके खूवाबों से निकले हैं। अब अमृता लेखन के उस मुकाम पे थी जब वियतनाम के प्रेसीडेंट हो ची मिन्ह दिल्ली आये और उन्होंने अमृता का माथा चूमकर कहा, ''हम दोनों दुनिया के गलत मूल्यों से लड़ रहे हैं, मैं तलवार से, तुम कलम से।''

फिर मास्को से, समरकंद, ताशकंद, उजबेकिस्तान, स्तालिनाबाद, अज़रबैजान, बाकू जाने कहाँ-कहाँ अमृता के अक्षर पहुँचे। अब अमृता को एक खूवाब लगातार आने लगा। एक पीठ जिस पर गर्म चादर पड़ी थी मेज पर रखी कैनवास पर पेंट कर रहा था। अमृता को कवर पेज बनवाना था उपन्यास का। सेठी साहब ने बताया बंबई से एक चित्रकार आया है उसकी कला में गज़ब की कारीगरी है। वो उपन्यास था 'आखिरी ख़त' जो साहिर के नाम लिखा था। दोनों ने ख़ामोशी से देखा ख़ामोश रहे। एक दिन इमरोज (जब उनका नाम इंद्रजीत था) खुश-खुश अमृता के पास आये कहा गुरूदत्त जी ने फिल्मों के लिये काम करने बुलाया है। जाने क्यों अमृता को ऐसा लगा बंबई उनसे सब छीन लेती है। वो चला गया। तीन दिन बाद उसका फोन आता है, 'मैं यहाँ नहीं रह सकूंगा।' अब इमरोज अमृता बिना शर्त अर्थ की तंगी के बीच जी रहे थे। अमृता ने समाज को यूं जवाब दियाः

हमने आज यह दुनिया बेची
और एक दीन खरीद के लाये
बात कुफ़ की, की है हमने
सपनों का इक थान बुना था
गज एक कपड़ा फाड़ लिया
और उम्र की चोली सी है हमने
अंबर की एक पाक सुराही
बादल का जाम उठाकर
घूंट चांदनी पी है हमने
हमने आज ये दुनिया बेची।

हरी-भरी फसल से प्रकृति भी प्रफुल्लित है!

फोटो- ऋतुराज बुड़ावनवाला

सिर्फ कानून नहीं... जज्बा भी चाहिए

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

इंग्लैंड के पूर्वी इलाके (2010) के अस्पताल में काम शुरू किया था। रात को ऑनकॉल जरूरी था। जब पहली बार बुलावा आया तो रात के दो बजे थे और अस्पताल पास ही था, लेकिन पहली बार ऐसे घुप्प अंधेरे में यूं रात को काम पर जाना, मरीज देखना और घर लौटना, आज भी रोयें खड़े हो जाते हैं।

दरअसल मरीज को अस्पताल में देखना नई बात नहीं थी, लेकिन यूं रात को अकेले निकलना और लौटने का एहसास कितना अलग होता है, यह भारत (या साउथ एशिया) में पली-बढ़ी लड़की ही जान सकती है। यूं रात को जाने में डर नहीं लगता और हर बार कुछ ज्यादा भरोसे के साथ जवाब दिया कि डरने की क्या बात है... अपनी गाड़ी से अपने अस्पताल ही तो जाना है। यह भरोसा इतना बढ़ा कि अब अनजान शहर और देश में भी रात में पहुंचने में डर नहीं लगता। भारत में लड़की होना अपराध है, यह बहुत पहले ही समझ आ गया था, शायद उस वक्त ही समझा दिया गया था, जब लड़के और लड़की का भेद नहीं जानते थे। शायद बारह-तेरह साल उम्र होगी, जब खौफ जैसा ज्ञान मिला था और उसके बाद एक दिन भी नहीं बीता, जब घर और बाहर इसका एहसास न दिलाया गया हो। जानते-बूझते या अनजाने में, यूं ही बातों-बातों में हों या गालियों में, हर तरह से लड़की, महिला होने से चिढ़-सी हो गई थी। इस बात से फर्क नहीं पड़ता था कि घर में किस तरह से उठो, बैठो, कैसे कपड़े पहनो की हिदायत मिल रही थी या घर के बाहर तानों और कसीदों की बौछार थी, 'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' की ही प्रार्थना निकलती थी।

उस दौर में जब-जब यह सवाल आता था कि किस बात या किस चीज से सबसे ज्यादा डर लगता है तो जवाब तुरंत हाजिर था 'पुरुष से!' पुरुष होने के इस समाज में क्या फायदे हैं, यह भले ही बाद में समझ आया हो, लेकिन उस वक्त यह समझ आ गया था कि इनके पास कोई तो ऐसी ताकत है, जो इन्हें किसी से डरने की जरूरत नहीं है। अभी तक अनगिनत बार रात के समय इमरजेंसी कॉल की वजह से अस्पताल जाना पड़ा है। एक पल के लिए भी अस्पताल के इन गलियारों में पुरुष से डर नहीं हुआ। ऐसी बात नहीं है कि ऐसा अस्पताल में ही मुमकिन है, बल्कि भारत से आई लगभग हर लड़की के ऐसे ही अनुभव हैं। (ऐसा बिल्कुल भी नहीं नहीं है कि यूके में महिला यौन शोषण के मामले हैं ही नहीं, लेकिन जिस तरह अपने देश में उन निगाहों और उन तानों-सीटियों को झेला है, यहां हालत कई गुना बेहतर हैं)। बचपन से लेकर बीते दिनों

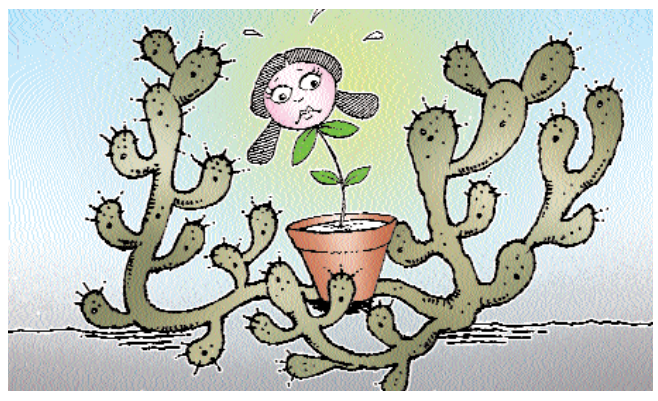

पंद्रह से ज्यादा बलात्कार होते हैं। अस्पताल हो या ऑफिस या घर या सड़क, ऐसी कोई जगह बची नहीं है, जहां यह दरिंदे मौजूद नहीं थे। तकलीफ तो यह है कि कोई सामने आ ही जाता है यह साबित करने कि लड़की या महिला की गलती साबित कर दी जाए।

कलकत्ता मेडिकल कॉलेज की डॉक्टर के साथ हुई दरिंदगी की खबर पढ़ने तक न जाने ऐसे कितने दिन और सुबह बीती हैं, जब उस खबर की याद से भी रूह कांप उठी है। आंकड़े बताते हैं, भारत में हर मिनट

किसी के कपड़े मुद्दे बन जाते हैं तो किसी के लिए शाम को घर से बाहर निकलना ही गुनाह हो जाता है। किसी के लिए मर्दों से बात करना ही उसकी गलती है तो किसी के लिए बात नहीं करना सजा है। जिन बातों को नानी ने मां को समझाया होगा, वही बातें मां ने हमें समझाने की कोशिश की। मौजूदा दौर में जिस तरह के हालात हैं, फिर हर मां-बाप सिखाने निकल पड़े हैं कि घर से अकेले न निकलो, शाम ढले घर लौट आओ, किसी भी जाने-अनजाने मर्द के साथ अकेले मत जाना, अकेले घर से मत निकलना। यह वो समाज है, जो जानवर (जी हां गाय फकत जानवर ही है) के लिए मरने-मारने पर उतारू है, लेकिन लड़कियों को आजादी से जीने का हक भी नहीं देता है।

दिल्ली हो या हाथरस या हैदराबाद या कलकत्ता, दरिंदगी तो हर कोने में है। हर तरफ से आवाज उठाने की जरूरत है कि अब और नहीं। सख्त कानून के साथ जरूरत इस जज़्बे की भी है। अब इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि लड़की क्या कर रही थी, वक्त क्या था, कपड़े क्या थे, जगह कौन-सी थी, अब अपराधी बख्शा नहीं जाएगा। जिनके अपराध साबित हो गए हैं, उन्हें सख्त सजा मिले, क्योंकि अब नहीं तो आखिर कब? आखिर कितनी और लड़कियों को यूं कुर्बान करेगा, यह समाज?